रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका

अभिलाषा

सत्यमेव जयते

33वां अंक 2023

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

अभिलाषा परिवार

बैठे हुए दाएं से -

श्रीमती मोना जैन, निदेशक (प्रतिवेदन) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री पंकज वर्मा, निदेशक (लेखापरीक्षा), लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री एस. आलोक, महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती प्रियंका त्यागी, उप निदेशक (मुख्यालय) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

दूसरी पंक्ति बाएं से -

श्री सतीश कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री राजीव कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती विदुषी वत्स, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
कुमारी आदिती खाण्डल, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती मंजू रानी, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अभिलाषा

2023

रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका
33वां अंक

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर कार्यालयीन पत्रिका 'अभिलाषा' के 33वें अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। राजभाषा हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं मेल–मिलाप की भाषा है। इसके विकास पर ही हमारा साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विकास निर्भर है, अतः इसका प्रचार–प्रसार करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

कार्यालय एवं पारिवारिक व्यस्तता के बावजूद रचनाकारों ने अपने विचार जो कहानी, संस्मरण, कविता, व्यंग इत्यादि जैसे रचनाओं के माध्यम से हम लोगों तक पहुँचाए हैं, वे सराहनीय हैं। रचनाकारों के कुशल प्रयास के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि आप सब के सहयोग से पत्रिका अपने अनवरत सफल प्रकाशन से उत्तरोतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए आप सबके हार्दिक सहयोग की कामना करता हूँ।

(श्री एस. आलोक)

महानिदेशक

लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

भारतवर्ष की अखंडता और एकता की द्योतक हमारी राजभाषा हिन्दी को अलंकृत करती, रक्षा लेखापरीक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' के 33वें अंक के सफल प्रकाशन पर सभी सुधी पाठकों, रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय संस्कृति के अतुल्य अलंकार होने के साथ ही राजभाषा हिन्दी ने एक सुगम वाहक के रुप में निश्चित ही हमारी सभ्यता की विविधता को पोषित किया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विचारों के आदान–प्रदान में भाषाई क्लिष्टता/भिन्नता के रुप में विद्यमान बाधा को हिन्दी ने बड़ी सहजता से समाप्त कर सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधा है जिससे एक अतुलनीय सद्भावना का संचार हुआ है। इसी सद्भावना में वसुधैव कुटुंबकम का सार निहित है।

मैं कामना करती हूँ कि राजभाषा हिन्दी की प्रगति के प्रति समर्पित सभी रचनाकारों का कलात्मक कौशल सदैव परिरक्षित रहे तथा 'अभिलाषा' चिरकाल तक निर्बाध रुप से विभाग को गौरवान्वित करती रहे।

सहज–सरल मुनियों के मन सी
व्यापक, वृहद, विशाल गगन सी
हिन्दी भारत–हदय में गूँजे........
सुखद, मधुर, मृदु राग यमन सी

आशा है उन्नत हो निसदिन
'अभिलाषा' की वाणी बनकर
महके हर घर–आँगन हिन्दी
खिलके सुरम्य सुहास सुमन सी

(रश्मि अग्रवाल)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (नौसेना), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' के 33वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका से जुड़े समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं संपादक मंडल इस अतुलनीय कार्य के लिए विशेष रुप से बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा नीति के सार्थक कार्यान्वयन में कार्यालयीन पत्रिका बहुत ही अहम् भूमिका का निर्वहन करती है। अन्य कार्यालयीन व्यस्तताओं के होते हुए भी निरंतर अथक रुप से हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करना, इस बात का द्योतक है कि यह विभाग राजभाषा हिंदी के प्रति अपने कर्तव्यों का पूरी जागरुकता के साथ पालन कर रहा है। आज हिन्दी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि, ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी निरंतर सफलता के शिखर की ओर अग्रसर है। कार्यालयीन पत्रिकाओं के निरन्तर प्रकाशन से राजभाषा हिन्दी के उत्थान को बल मिलता है।

पत्रिका का प्रकाशन एक रचनात्मक प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ कार्मिकों की रचनात्मकता एवं लेखन क्षमता को उजागर करने के लिए भी उचित मंच प्राप्त होगा, जहाँ वे अपने विचारों को व्यक्त कर अपनी लेखनी सुदृढ़ कर सकेंगे। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' राजभाषा के उन्नयन में सदैव अपना बहुमूल्य योगदान देती रहेगी और अपने पाठकों को राजभाषा से जोड़ते हुए कार्यालयीन कार्यों को राजभाषा में ही करने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(शरत चतुर्वेदी)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली अपनी पत्रिका अभिलाषा के 33वें अंक को प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना ही कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोगों की प्रति प्रतिवध्दता को चिन्हित करता है। रक्षा लेखापरीक्षा से संबंधित विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त श्रेष्ठ एवं रोचक कृतियों से सुसज्जित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा प्रदान करती है बल्कि यह रक्षा लेखापरीक्षा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के उत्साह में वृध्दि भी करती है जिससे अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रेरणा मिलती है।

मैं इस पत्रिका के 33वें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोगी, विविध रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन कार्य में संलग्न संपादक–मंडल को हृदय से बधाई देता हूँ, जिनके प्रयासों से इस पत्रिका का प्रकाशन कार्य निर्बाध रूप में संपन्न हो पाया है। मैं आशा करता हूँ कि हमारी इस पत्रिका को साहित्य् की दृष्टि से सृजनशील एवं राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए एक सर्वोत्तम साधन के रूप में प्रसारित किया जाता रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,।

(संतोष कुमार)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (वायुसेना), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

पत्रिका के 33वें संयुक्तांक के सफल विमोचन के लिए हार्दिक बधाईयाँ। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे सहकर्मियों को एक व्यासपीठ मिला है, जहाँ वे हिन्दी के क्षेत्र में अपने कौशल की अभूतपूर्व प्रतिभा का न सिर्फ प्रदर्शन कर रहे हैं, बल्कि आजादी के 75वें वर्ष में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अपनी अहम भूमिका को भी निभा रहे हैं।

हिन्दी पत्रिका अभिलाषा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं साहित्य कृतियों के रचनाकारों को हार्दिक अभिनंदन। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(प्रीति अब्राहम)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), पुणे

सत्यमेव जयते

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' के 33वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

कार्यालयी हिन्दी पत्रिकाएँ कार्यालय के नवोदित रचनाकारों के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सशक्त मंच तैयार करती हैं। लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' राजभाषा के प्रति कर्तव्यनिष्ठ भाव से राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है। कार्यालय के कार्मिकों का राजभाषा के प्रति प्रेम ही 'अभिलाषा' पत्रिका की दीर्घ यात्रा का परिचायक है।

पत्रिका के प्रकाशन में सहभागी सभी अधिकारी, कर्मचारी, लेखकवृंद एवं संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(वी. एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), चंडीगढ़

संदेश

भारतीय परम्परागत संस्कृति के धार्मिक व गूढ़ भावों को हृदय तल तक सिंचित करने वाली, कार्यालय की पत्रिका 'अभिलाषा' का 33वां गौरवपूर्ण अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका की साज–सज्जा एवं अद्वितीय प्रस्तुतीकरण, मौलिकता व सृजनात्मक अभिव्यक्ति को समेकित करते हुए, राजभाषा हिन्दी के प्रति अपना पूर्ण समर्पण व्यक्त कर रहे हैं।

उत्तम संयोजन व कुशल सम्पादक मंडल के साथ–साथ रचनाकारों के सार्थक रचना शीर्षकों ने पत्रिका को विशेष बनाया है। पत्रिका को अपनी अमूल्य रचनाओं के माध्यम से सहयोग करने हेतु मैं इस कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित !

(मोना जैन)
निदेशक (प्रतिवेदन)
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

भारत की राजभाषा हिन्दी की प्रगति में निरंतर अपना सांस्कृतिक व अनुकरणीय योगदान प्रदान करती हमारे कार्यालय की पत्रिका 'अभिलाषा' का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी हम सबकी राजभाषा है, अतः हिंदी को विकास के पथ पर अग्रसर करना हमारा नैतिक कर्तव्य है और इस दायित्व निर्वहन में विभागीय पत्रिकाएं एक सराहनीय भूमिका निभाती हैं। विभागाधीन एवं अधीनस्थ कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनात्मकता को पल्लवित करने में तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार में, इस पत्रिका का बहुत योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार को मात्र प्रोत्साहन देना ही नहीं अपितु साहित्यिक सृजनशील कार्मिकों को उनकी रचनाओं की प्रस्तुति का उपयुक्त मंच प्रदान करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका से प्रेरित होकर अधिकाधिक पाठक हिन्दी की ओर प्रवृत्त होंगे।

(राजीव कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संपादकीय

बहुलतावादी संस्कृति भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य की धाती है। प्राचीन समय से इस भू–भाग में विभिन्न भाषा, जाति, धर्म के लोग सामंजस्य के साथ निर्वाह करते आए हैं। हम सभी को इस विरासत पर अत्यधिक गर्व है और आशा करते हैं कि आने वाले समय में भी इस परंपरा का हम सभी पालन करते रहेंगे।

किसी भूखंड को एक राष्ट्र के रूप में अभिहित करने के लिए एकात्मक सूत्र का होना अनिवार्य होता है जहां से उस भूखंड के निवासी एक दूसरे से एकता रख सकें। यह एकात्मक जीवन पद्धति का कोई भी अंग हो सकता है जिसमे धर्म, भाषा, खान–पान आदि का समावेश कर सकते हैं।

'अभिलाषा' भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का उत्तम माध्यम है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में समाहित रचनाएं आपके ज्ञानकोष में वृद्धि करने के साथ ही आपके मन को साहित्य रस से आह्लादित भी करेंगी। हम यूं ही राजभाषा के उत्थान में अपना अथक योगदान देते रहें और 'अभिलाषा' का प्रकाशन निरंतर चलता रहे, इसके लिए हम अपने पाठकों के बहुमूल्य सुझावों एवं मार्गदर्शन के आकांक्षी हैं।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

विदुषी वत्स

(विदुषी वत्स)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
सदैव ऊर्जावान (निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्रोत्साहन से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिन्द!

आपके अभिमत, आपके पत्र

प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) आंध्र प्रदेश का कार्यालय, विजयवाड़ा-520002
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) A.P. Vijyawada.-520002

प्र.म.ले.(ले. व ह.)/आं.प्र./रा.भा.अ./प्रतिक्रिया/ 322766 दिनांकः- 20.10.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं
ब्लॉक ए, सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर
अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली-110023

विषयः- हिंदी पत्रिका अभिलाषा के 32 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका अभिलाषा के 32 वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय में सहर्ष प्राप्ति हुई, इसके लिए सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर श्री धीरेन्द्र शुक्ला, वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी की "हिंदी भाषा का सम्मान- समय की पुकार", सुश्री सुनीता सिंह लेखा परीक्षक की "चिट्ठी" श्री भरतराज, सहायक पर्यवेक्षक की "जीवन के अनुभव की कुछ बातें", श्री श्रवण कुमार ठाकुर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित "अब हमें कोई पूछता नहीं" सराहनीय रचनाएं हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

धन्यवाद।

भवदीया,

वरि. लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/108
दिनांक: 21 -10-2022

सेवा में,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं)
नई दिल्ली-110023
ई-मेल dgads@cag.gov.in

विषयः हिंदी गृह-पत्रिका "अभिलाषा" के 32 वें संस्करण के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "अभिलाषा" के 32 वें संस्करण की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री धीरेन्द्र शुक्ला की रचना "हिंदी भाषा का सम्मान, समय की पुकार", श्री संजीव की रचना "गौरक्षा और भारत", श्री वीरेश कुमार की रचना "वैशाली-लोकतंत्र की जननी", श्री श्रवण कुमार की रचना "नैविला से उसरविला", श्री अभितेश कुमार की रचना "धैर्य-विलुप्त होता गुण", सुश्री तृप्ता की रचना "लाहपरवाह", श्री भरतराज की रचना "जीवन के अनुभव की कुछ बातें", श्री गौरव सिंह की रचना "मैं गधा", श्री भारती प्रवीण की रचना "यही तो जीवन है", सुश्री उर्मिला की रचना "सफलता के मूल मंत्र एवं मित्र", श्री आकाश त्रिवेदी की रचना "ज़िम्मेदारी से मुक्ति", सुश्री अनीता चुटानी की रचना "जंगल हमें सिखाते हैं, पुनः हरे हो जाना", सुश्री तनवी की रचना "जिंदगी के मर्म में", सुश्री नर्मदा कुमारी की रचना "मैं पानी बनाना चाहती हूँ", सुश्री नेहा तिवारी की रचना "संघर्ष ही जिंदगी है", श्री विदुषी वत्स की रचना "क्या यही है जीवन का लक्ष्य" आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर और अंतिम पृष्ठ पर आकाश में उड़ते परिंदों का चित्र व्यक्ति को इस कठिन जीवन के हर एक क्षेत्र में एक नई ऊर्जा और उम्मीद भरी उड़ान भरने के लिए प्रेरित करता है। कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बढ़िया है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन: 0172-2702174, फैक्स 0172-2703110
क्रमांकः- हिंदी कक्ष/अंकुर/हि.प./2022-23/480
दिनांकः-19-10-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं,
7 वाँ तल, 'ए' ब्लॉक, डिफेंस ऑफिसेज कॉम्प्लेक्स,
सरोजनी नगर बस डिपो के पास,
अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली - 110023

विषयः-विभागीय पत्रिका "अभिलाषा" के 32 वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "अभिलाषा" का 32 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री धीरेन्द्र शुक्ला की "हिंदी भाषा का सम्मान, समय की पुकार, श्री अभितेश कुमार की "धैर्य - विलुप्त होता गुण", एवं सुश्री किरन कुमारी सौंखला की "पापा वो गुजरा ज़माना याद आता है" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/108
दिनांक: 21 -10-2022

सेवा में,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं)
नई दिल्ली-110023
ई-मेल dgads@cag.gov.in

विषयः हिंदी गृह-पत्रिका "अभिलाषा" के 32 वें संस्करण के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "अभिलाषा" के 32 वें संस्करण की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री धीरेन्द्र शुक्ला की रचना "हिंदी भाषा का सम्मान, समय की पुकार", श्री संजीव की रचना "गौरक्षा और भारत", श्री वीरेश कुमार की रचना "वैशाली-लोकतंत्र की जननी", श्री श्रवण कुमार की रचना "नैविला से उसरविला", श्री अभितेश कुमार की रचना "धैर्य-विलुप्त होता गुण", सुश्री तृप्ता की रचना "लाहपरवाह", श्री भरतराज की रचना "जीवन के अनुभव की कुछ बातें", श्री गौरव सिंह की रचना "मैं गधा", श्री भारती प्रवीण की रचना "यही तो जीवन है", सुश्री उर्मिला की रचना "सफलता के मूल मंत्र एवं मित्र", श्री आकाश त्रिवेदी की रचना "ज़िम्मेदारी से मुक्ति", सुश्री अनीता चुटानी की रचना "जंगल हमें सिखाते हैं, पुनः हरे हो जाना", सुश्री तनवी की रचना "जिंदगी के मर्म में", सुश्री नर्मदा कुमारी की रचना "मैं पानी बनाना चाहती हूँ", सुश्री नेहा तिवारी की रचना "संघर्ष ही जिंदगी है", श्री विदुषी वत्स की रचना "क्या यही है जीवन का लक्ष्य" आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर और अंतिम पृष्ठ पर आकाश में उड़ते परिंदों का चित्र व्यक्ति को इस कठिन जीवन के हर एक क्षेत्र में एक नई ऊर्जा और उम्मीद भरी उड़ान भरने के लिए प्रेरित करता है। कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बढ़िया है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

हिंदी

588024
15/11/22

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

ांक- हिंदी प्रकोष्ठ/ले.प./पत्रिका पावती/2022-23/206 दिनांक- 01.11.2022

15 NOV 2022

ा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी)
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
ब्लाक-ए सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर
अफ्रीका एवेनउ,
नई दिल्ली-110023

षय- हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 32वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।

होदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका **"अभिलाषा"** के 32वें अंक की एक प्रति ा प्राप्ति हुई है। धन्यवाद! पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही अच्छी है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई था पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

उत्तम मेहरा 1/11/22

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

हिंदी

स्पीड पोस्ट

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

588079
15/11/22

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संख्या No. हि.अ./ले.प./पत्रिका/37/2022-23/68

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna - 800 001

दिनांक/Date: 07.11.2022

15 NOV 2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ,
ब्लॉक-ए, सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर,
अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली- 110023

विषय: वार्षिक हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 32वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 32वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ बधाई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक एवं पठनीय हैं। सुश्री सुनीता सिंह की कहानी 'चिट्ठी', श्रीमती भारती प्रवीण की कविता 'यही तो जीवन है', श्री अभितेश कुमार का आलेख 'धैर्य-विलुप्त होता गुण', श्री ललित कुमार वर्मा का यात्रा-वृतांत 'पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों की सैर' तथा श्री मयंक की कविता 'ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

78
16/11/22

राजभाषा हिन्दी के उन्नयन तथा कार्मिकों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में "अभिलाषा" ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो, इसी कामना के साथ पत्रिका परिवार को पुनः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

07/11/2022

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223... 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/Email-agaubihar@cag.gov.in, पो० बक्स/P.B. No.-47

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगाँव, गुवाहाटी
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY, MALIGAON, GUWAHATI

संख्या: प्र/10-4/2010/82 (पत्रिका)
दिनांक: 21/11/2022

रिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
ार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,रक्षा सेवाएं
लॉक - ए, सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर
फ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली - 110023

वेषय: वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक की प्राप्ति के संदर्भ में

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक है। इसमे श्री धीरेन्द्र शुक्ला की 'हिन्दी भाषा का सम्मान, समय की पुकार', सुश्री सोमवती की 'स्वतंत्रता पूर्व' ी हिन्दी भाषा की विकास यात्रा का क्रमबद्ध वर्णन, श्री अभितेश कुमार की 'धैर्य-विलुप्त होता गुण' तथा श्रवण कुमार ठाकुर की 'नैविला से उसरवीला' आदि रचनाएँ विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व रुचिकर हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

(मेरीना सिमते)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

सं.हि.प्रशा.-2022-23/196

66
31/10/22

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का
कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER
AUDIT BOARD,BENGALURU-560001.

दिनांक - 17.10.2022

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा) रक्षा सेवाएं,
ब्लॉक - ए, सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर,
अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली - 110023

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका 'अभिलाषा' का 32 वाँ अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री धिरेन्द्र शुक्ला का लेख "हिन्दी भाषा का सम्मान समय की पुकार" सुश्री उर्मिला का लेख "हमारा हिंदुस्तान" सुश्री किरन कुमारी सौंखला का लेख "पापा, वो गुजरा जमाना याद आता है" एवं सुश्री नेहा तिवारी का लेख "संघर्ष ही जिंदगी है" आदि ज्ञानवर्धक हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि.क./ ले.व ह. / पत्रिका समीक्षा / 2022-2023 / 174 दिनांक 09/11/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी)
कार्यालय महा निदेशक (लेखापरीक्षा)
रक्षा सेवाएँ ब्लाक-ए, सातवाँ तल,
रक्षा कार्यालय परिसर,
अफ्रिका एवन्यू, नई दिल्ली

विषय : रक्षा लेखा परीक्षा विभाग की वार्षिक पत्रिका ' अभिलाषा ' के 32वें अंक का प्रेषण ।

महोदय,

रक्षा लेखा परीक्षा विभाग की वार्षिक पत्रिका ' अभिलाषा ' के 32वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाये उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिंदी)

2651033, फैक्स: 0177–2651743
2651033, Fax: 0177-2651743

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Accountant General (Audit-I)
Uttar Pradesh, Prayagraj

पत्रांक:प्र.म. ले. (ले. प.–I)/हि. अनु./1146
दिनांक : 15/03/2023

सेवा मे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिन्दी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं,
ब्लॉक–ए, सातवाँ तल, रक्षा कार्यालय परिसर,
अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली -110 023

विषय : विभागीय पत्रिका '**अभिलाषा**' के 32वें अंक की पावती के संबंध मे |

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका '**अभिलाषा**' के 32वें अंक की प्राप्ति हुई | पत्रिका के सफल संपादन के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाई | इस पत्रिका में शामिल रचनाएँ अत्यंत उत्कृष्ट कोटि की हैं एवं पाठकों का ज्ञान वर्धन करने वाली हैं | पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु संपादक मंडल को अनंत शुभकामनाये |

यह पत्र वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन महोदय के अनुमोदन से निर्गत किया जा रहा है

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

सत्यनिष्ठा भवन, 15-ए, दयानन्द मार्ग, प्रयागराज-211001 दूरभाष : (कार्यालय) 0532 - 2420441 (का) फैक्स : 0532-2424102
Satyanishtha Bhawan, 15-A, Dayanand Marg, Prayagraj -1 Phone: 0532-2420441(O) Fax: 0532-2424102

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/127
दिनांक: 14.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, ब्लॉक-ए,
सातवां तल, रक्षा कार्यालय परिसर,
अफ्रीका अवेन्यू, नई दिल्ली- 110023

संदर्भ:- सं. हिंदी कक्ष/अभिलाषा/2022-23 दिनांक 12.10.2022

विषय:- हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 32वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "अभिलाषा" के 32वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलूओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री धीरेन्द्र शुक्ला, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी का लेख "हिंदी भाषा का सम्मान, समय की पुकार", श्री शिवम् शुक्ला, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की कविता "गुरु वंदना" एवं तथा सुश्री विदुषी वत्स, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता "क्या यही है जीवन का लक्ष्य?" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

FAX :0361-2303142/2305901

प्रधान महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं० 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172–2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/272
दिनांक: 23.12.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा,
रक्षा सेवाएं,
नई दिल्ली ।

महोदय,

विषय : हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक के संबंध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 12.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अभिलाषा' के 32वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती सुनीता सिंह का लेख 'चिट्ठी', श्री बीरेश कुमार का लेख 'वैशाली-लोकतंत्र की जननी', श्रीमती सोमवती का लेख 'स्वतंत्रता पूर्व' एवं श्री ललित कुमार वर्मा का लेख 'पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों की सैर' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री जे. पी. गणेश बाबू की कविता 'हिंदुस्तान की भाषा हिंदी', श्री भारती प्रवीण की कविता 'यही तो जीवन है', श्री श्रवण कुमार ठाकुर की कविता 'अब हमें कोई नहीं पूछता', श्रीमती नर्मदा कुमारी की कविता 'मैं पानी बनना चाहती हूं' एवं श्रीमती तनवी की कविता 'जिंदगी के मर्म में' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	संदेश		2-9
2.	संपादकीय	श्रीमती विदुषी वत्स, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	10
3.	राजभाषा प्रतिज्ञा	भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग	11
4.	आपके अभिमत, आपके पत्र		12-14
5.	मन चाहता है	श्रीमती विदुषी वत्स, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	16
6.	मेरी बिटिया	श्री शिवम् शुक्ला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	17
7.	गिर के उठना और चलना	श्री पवन कुमार पाण्डेय, लेखा परीक्षक, (रक्षा सेवाएं), मेरठ	18
8.	समस्याएं जीवन का पर्याय हैं	श्री आई. वी. एस. श्रीनिवास, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (नौसेना), विशाखापट्टणम	19
9.	जब उमर ढ़ल जाती है	श्री पवन कुमार पाण्डेय, लेखा परीक्षक, (रक्षा सेवाएं), मेरठ	20
10.	मैं और मेरी दाढ़ी के सफेद बाल	श्री अभितेश कुमार, कनिष्ठ अनुवादक, (नौसेना), विशाखापट्टणम	21
11.	वक्त अच्छा हो या बुरा हो गुज़र ही जाता है।	श्री रवि कुमार सोनी, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता	24
12.	मान लूँ क्या हार मैं	श्री अंशुमन सिंह, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), प्रयागराज	25
13.	21 जुलाई 2011	श्री हरिओम कुमार, कनिष्ठ अनुवादक, (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता	26
14.	उठ, संभल, फिर से चल	पिंकी सिंह, कनिष्ठ अनुवादक, (रक्षा सेवाएं), पुणे	27
15.	परिवर्तन	श्रीमती विदुषी वत्स, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	28
16.	सरस्वती वन्दना	श्रीमती शालू, लेखापरीक्षक, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	29
17.	मेरी गुड्डी	श्रीमती सुधा शुक्ला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	30
18.	कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी	श्रीमती उर्मिला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	31
19.	सन्नाटा	श्रीमती उर्मिला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	32
20.	निर्णय लेना	श्री शिवम् शुक्ला, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	34
21.	भारत की जी-20 अध्यक्षता पर एक विचार	श्री आनंद नाग, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (आयुध निर्माणियाँ, कोलकाता	38
22.	अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत	श्रीमती सुदेश कुमारी, हिंदी अधिकारी, कोलकाता	41
23.	क्रिकेट	श्री जितेन्द्र कुमार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	44
24.	काल करे जो आज कर	श्रीमती विदुषी वत्स, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	47
25.	मैं स्त्री हूँ	श्री संजीव कुमार, लेखापरीक्षक, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	51
26.	कामेश्वर धाम - कारो	श्री राजेश रजक,लेखापरीक्षक, (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता	55
27.	डर के आगे जीत	श्रीमती स्मृति नागर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता	57
28.	सत्य	सुश्री काजल जैन, लेखापरीक्षक, (रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली	59

‘मन चाहता है’

श्रीमती विदुषी वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

आज फिर कुछ चुलबुली शरारत
करने को मन चाहता है,
मस्ताने रंगीले पंख खोल, नए-नए सपनों में
उड़ने को मन चाहता है।
दिल में बसी है एक प्यारी-सी,
अरमानों की दुनिया,
उस प्यारी-सी, अरमानों की दुनिया में
खो जाने को मन चाहता है ।
दूर है कोई जो इस दिल में बसता है,
उसके पास बैठ
समय बिताने को मन चाहता है ।
आज फिर कुछ चुलबुली शरारत
करने को मन चाहता है।

चाँद पर जा उसकी सोमसुधा को
स्पर्श करने को मन चाहता है ।
समुद्र के किनारे लहरों को सहलाती,
उस मनचली पवन को
महसूस करने को मन चाहता है।
चील-सा उड़, आकाश की ऊँचाईयों में
उतरने को मन चाहता है
आज जाने क्यों उस रुह की अनकही
हर चाहत को, पूरा करने को मन चाहता है।

'मेरी बिटिया'

शिवम् शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

जब से आयी हो जीवन में मेरे,
अपने इन नन्हे कदमों के साथ।
हो गयी है मेरे जीवन में,
खुशियों की रिमझिम बरसात।

जब हुआ कभी मन खिन्न मेरा,
तुमने ही तो हंसाया है।
आयी हो जब से जीवन में
तब से उजियारा छाया है।

जब भी ऑफिस से आता हूँ घर,
दौड़ के यूँ तेरा गोद में चढ़ जाना।
देता है मर्मस्पर्शी अनुभव ऐसा,
दिन-भर की थकान का मिट जाना।

कब बीत जाए नन्हा बचपन ये,
समय के घूमते पहिये के साथ।
सीने में समा के रख लूंगा मैं,
तेरी हर एक नटखट याद।

मम्मा की तू जान है बिटिया,
पापा की तू शान है बिटिया।
छवि तुम्हारी ऐसी है कि,
हम सबका अभिमान है बिटिया।
मेरी बिटिया, प्यारी बिटिया,
सारे जग से न्यारी बिटिया।

'गिर के उठना और चलना'

पवन कुमार पाण्डेय
लेखापरीक्षक
कार्यालय निदेशक लेखा परीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), मेरठ

गिर पड़े तो क्या हुआ,
फिर उठना है, फिर चलना है।
छाया है तम हर ओर, मगर क्या
दीपक जैसे हर पल जलना है।
हार, जीत पथ के साथी हैं
जीवन दीप में जैसे बाती है।
प्रतिकूल हवाएं हैं तो क्या,
हमको उसमें ढलना है
गिर पड़े तो क्या हुआ,
फिर उठना है, फिर चलना है।
इच्छाओं के अम्बार लगे हैं,
सब ही तो मझधार लगे हैं।

इक चुटकी विश्वास उठा,
हार के मस्तक मलना है,
गिर पड़े तो क्या हुआ,
फिर उठना है फिर चलना है।
हाँ! कि सब ही विरुद्ध हैं,
हाँ! कि रास्ते रुद्ध हैं,
हाँ! कि पग में कंटक लगे है,
हाँ! कि हर पल संकट लगा हैं,
इस समय की मार को,
बनके अहेरी छलना है।
गिर पड़े तो क्या हुआ,
फिर उठना है, फिर चलना है।

‘समस्याएं जीवन का पर्याय हैं’

आई वी एस श्रीनिवास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखा परीक्षा,
(नौसेना), विशाखापट्टणम

समस्याएं वस्तुत: जीवन का पर्याय हैं। यदि समस्याएं न हों तो आदमी प्राय: अपने को निष्क्रिय समझने लगेगा। ये समस्याएं वस्तुत: जीवन की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। समस्याओं को सुलझाते समय एवं उनका समाधान करते समय व्यक्ति का श्रेष्ठतम तत्व उभरकर सामने आता है। धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान आदि इन्हीं प्रयत्नों की देन है। पुराणों में अनेक कथाएं यह शिक्षा देती हैं कि मनुष्य, जीवन की हर एक परिस्थिति में जीना सीखे व कोई समस्या होने पर उसके समाधान के उपाय के विषय में सोचे।

प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। जागिए, उठिए, दृढ-संकल्प के साथ संघर्ष रुपी विजय पथ पर चढ़ जाएं और अपने जीवन मे विकास की बाधाओं रुपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें।

‘जब उमर ढ़ल जाती है’

पवन कुमार पाण्डेय
लेखापरीक्षक
कार्यालय निदेशक लेखा परीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), मेरठ

जब उमर ढ़ल जाती है,
हर बात हमें खल जाती है।
खलता कि बेटा कभी भी
साथ में खाता नहीं,
खलता कि बेटा कभी
कमरे में मेरे आता नहीं।
खलता ये कि अलगाव कैसे,
बेटे से मेरा हो गया,
खलता कि अब वो कैसे,
बिन मेरी थपकी सो गया।
स्पर्श अपने ही तनय को,
उँगलिया नहीं कर पाती हैं,
जब उमर ढ़ल जाती है,
हर बात हमें खल जाती है।
खलता कि घर के हिस्से में,
क्यूँ दुनिया अपनी सिमट गई।
खलता कि, सबकी स्मृतियों से,
मेरी हस्ती क्यूँ सिमट गई।
अपने के ही प्रेम भाव को,
आँखे क्यूँ अकुलाती हैं,
जब उमर ढ़ल जाती है,
हर बात हमें खल जाती है।।

‘मैं और मेरी दाढ़ी के सफेद बाल’

अभितेश कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,

(नौसेना), विशाखापट्टणम

रहता हूं एक
अजीब सी उलझन में आजकल,
माथापच्ची घंटों करुं,
पर नहीं निकलता कोई हल।
साफ कर डालूं इसको
या दूं कोई आकार,
इसी उलझन पर सोचता हूं
अब मैं बारम्बार।
करता हूं कोशिश भुलाने की
पर लटका है आइना याद दिलाने,
हंसी-हंसी में पत्नी भी अब तो,
मारने लगी है ताने।
अरे पत्नी की तो सह भी लूं,
बच्चे भी नहीं छोड़ते।
इस पकती खेती को वो
मेरी उम्र से हैं जोड़ते।
अब उनको कैसे समझाऊं,
ये उम्र की नहीं है गलती।
उनके पालन-पोषण की चिंता पर
उम्र की भी नहीं चलती।
उम्र खींचती 50 की ओर,
मैं जाना चाहूं 30 में।
फिर एक आइडिया आता है,
इस उधेड़बुन के बीच में
समझ नहीं आता, ये आईडिया
फ्लॉप रहेगा या हिट।
जाता, किराने की दुकान से
लाता रंग का पैकेट,
घोलकर पानी में उसको फिर
दाढ़ी पर पोत डालता।
भीड़ में चलता मुंह उठाकर
खुद की फिर डींग मारता।
एक हफ्ते में सारा रंग
दाढ़ी से उतर जाता है,
और फिर से मन मेरा उसी
उलझन में घिर जाता है।
फिर सोचता क्यूं छिपूं मैं,
काले रंग की आड़ में
ब्लैक एंड व्हाइट के साथ जियूँ,
दुनिया जाए भाड़ में।
दुनिया को तो जाने दूं
बीवी बच्चे फिर भी हंसते हैं,
दुनिया और इनके बीच मासूम
मैं और दाढ़ी पिसते हैं।
खैर..................
छोड़ दी है फिक्र अब मैने,
चाहे जो हो हाल।
नजर-अंदाज करते अब सबको,
मैं और मेरी दाढ़ी के सफेद बाल।

सेवानिवृत्ति, नया साल 2023,

तीज एवं अन्य कार्यालयीन समारोह

'वक्त अच्छा हो या बुरा हो गुजर ही जाता है'

रवि कुमार सोनी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुजर ही जाता है,
छुपा है वक्त में क्या राज,
बंदा ये कहां समझ पाता है।

वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुजर ही जाता है।
कभी खुशी के आँसू, कभी गम के बादल,
यह वक्त ही तो लाता है।

वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुज़र ही जाता है।
बढ़ता है जिंदगी में वही आगे,
जो वक्त के साथ चलना सीख जाता है।

वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुजर ही जाता है,
देता है जख्म तो जख्मों पर मरहम भी,
यह वक्त ही लगाता है।

वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुजर ही जाता है,
वक्त का खेल बड़ा निराला
जिसने राजा को रंक और रंक को राजा बना डाला
वक्त अच्छा हो या बुरा हो,
गुज़र ही जाता है।

'मान लूँ क्या हार मैं'

अंशुमन सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), प्रयागराज

जो आसमां की शान था, जो सूर्य के समान था
क्यों है अब बुझा-बुझा, जो ज्वलंत आसमान था।
एक्घनि क्यों ये थम गई, क्या स्वप्न देखा था यही ।
गंतव्य है ये कौन सा, इस ओर तो चला नहीं।
क्या नियति में था यही, जो भाग्य रेखा कह रही
तू तज खड्ग, ये पुष्प ले, अब युद्ध की उमर गई ।
और हानि इसमे है नहीं, सदा से है हुआ यही ।
है कौन जग में जो कहे, के हार देखी ही नहीं ।
सोच क्या रहा है तू, जहां पे ये खड़ा है तू
आने को इसी जगह, है जग बहा रहा लहू ।
क्यों खुद से ये लड़ाई है, और क्या दिला ये पाई है
संघर्ष कर लिया बहुत, संतुष्टि कभी पाई है?
तो तोड़ दूँ क्या ख्वाब मैं, जो दशकों से था पल रहा
और चला चलूँ यूहीं, जैसे था मैं चल रहा।
बह रहा हूँ धार में, मै वक्त की कतार में
हैं सभी जो कह रहे, तो मान लूँ क्या हार मैं?
मान लूँ क्या हार मैं? हाँ बस सुनना था यही
चेत चौंक कर उठी, ये बात कैसे सोच ली।
हाँ आयु इतनी है नहीं, पर जितनी भी है जी गई ।
ठोकरों से तू गिरा, सोच तो गिरी नहीं।
हाँ गिरा है, तू डरा है, फिर भी आज भी खड़ा है
हार कैसे मान लेगा, किस विचार में पड़ा है।
हाँ कठिन ये युद्ध था, घाव बहुत खाऐ हैं
पर तेरी गुलेल ने, भी बहुत किले गिराए हैं।
कुछ भीतरी भी घाव हैं, जो साथ ही अब जाएंगे
इक टीस है, कुछ दर्द है, ज्यादा बता ना पाएंगे।
कैसी ये हैरानी है, मुश्किल तो आनी-जानी है
हारा तो है तू कई बार, पर हार कहाँ ही मानी है।
सौ बातों की है बात यही, तब तक पंतग ये झुके नहीं
जब तलक डोर हाथों में है, फिर टूट गई तो टूट गई।
चल झाड़ धूल उठ भाग रास्ते रुके हुए हैं
सम्मान दिला उन शीशों को, जो झुके हैं।
तू है रचियता, कौन तुझको टोक देगा
कहानी तब खत्म होगी, जब लिखना तू रोक देगा
गंतव्य अब भी है वही, राह बस बदल गई
विश्राम हो गया बहुत, स्फूर्ति फिर से ला नई।
फिर आसमां की शान बन, तू सूर्य के समान बन
लड़ता जा, तू बढ़ता जा, तू फिर से अंशुमान बन।

'21 जुलाई 2011'

हरिओम कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

ये बात है उस काले दिन की,
जिस दिन अम्बर भी रोया था,
क्या पाया किसने कौन कहे,
सबने एक दोस्त को खोया था।
थे वर्षों तक जो साथ रहे,
वो अलग हुए बस इक पल में,
है मुश्किल ये बतला पाना,
किसने विष-बीज ये बोया था।

ये बात है उन साथीगण की,
हाँ बस उन चिन्हित चारों की,
कभी फूल थे जो इक डाली के,
और शान थे बांग-बहारों के,
ये बात नहीं अनजान नगर,
कही दूर-दराज पहाड़ों की,
ये बात है ओम, शैल, प्रिया-पाखी
और बस उनके ही विचारों की।

दिखते थे चाहे अलग-अलग
पर दिल में सदा ही बसते थे,
वो भुला के सारी दुनिया को,
इक-दूजे के संग रहते थे,
हो अलग अगर रोना आता,
मिलने के लिए मचलते थे,
थी दोस्ती ही दुनियां उनकी,
इक-दूजे के संग हँसते थे।

कुछ लम्हों का था साथ नहीं,
वर्षों में ये मौसम आया था,
वो मिले कदम कुछ साथ चले,
तब जाकर रिश्ता बन पाया था,
जो बुझा सके ना आंधी कोई,
वो दोस्ती-दीप जलाया था,
जाना-माना, सोचा-समझा,
तब जाकर गले लगाया था।

कितना पावन, कितना अनुपम,
क्या सच्चा दोस्त बनाया था,
ऐसा रिश्ता जिसे देख,
ऊपर वाला भी मुस्काया था,
किस्मत से बनते हैं रिश्ते,
किस्मत ने उन्हें मिलाया था,
दूँ उनपे लुटा किस्मत अपनी,
किस्मत का दिल हर्षाया था,
पर हाय रे क्यूँ फूटी किस्मत,
क्यूँ रिश्ता वो बेजान हुआ,
क्या कमी हुई एहसासों में,
क्यों पल भर में निष्प्राण हुआ।

इक-दूजे के संग रहते थे,
जो एक-दूजे पे मरते थे,
कैसी ठेस लगी दिल को,
इक-दूजे से अनजान हुआ।

वो चार थे मानो चार दिशा,
क्यूँ वो धरती आकाश हुए,
कैसे चाहत की चिता जली,
क्यूँ खत्म छुपे एहसास हुए,
दो-दो का वर्ग बना बिछड़ा,
दो-दो के ही जज्बात मिले,
क्यूँ प्रिया-पाखी बन धरती बढ़ी,
क्यूँ ओम-शैल आकाश हुए।

'उठ, संभल, फिर से चल'

पिंकी सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय (प्रधान निदेशक)
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), पुणे

तू यामिनी की निशा नहीं,
शौर्यमान अनिरुद्ध किरण है।
जीवन का हर पल जंग है
और विहान नयी किरण है।

एकलव्य सा तेरा लक्ष्य अटल
तू उठ, संभल, फिर से चल।

तू अर्जुन है कर्मभूमि का
तेरा संघर्ष तेरा जीवन है,
कर ध्येय स्वयं का अटल अचल
तू उठ, संभल फिर से चल।

देख तेरा धैर्य न हार जाए
न लक्ष्य ओझल होने पाए,
अंत तक कमान संभाले रख
तू उठ, संभल, फिर से चल।

असंख्य पराजय हो चाहे
खुद पर यकीन बनाए रख,
असीमित प्रकाशमय जैसा उठे
वो सप्तऋषि तारा है तू।

रख विश्वास खुद पर
मिटा हार का डर,
तू ही अभिमन्यु कर्मभूमि का
तू उठ, संभल, फिर से चल।

‘परिवर्तन’

श्रीमती विदुषी वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

एक दिन था मैं हरा-भरा
पर अब हूँ सूखा और मरा,
देता था लोगों को फल और छाया ।
लेकिन एक दिन एक दानव आया,
उसको मेरा यह रुप न भाया,
मैं रोया, चिल्लाया, उसको तरस न आया।
मार कुल्हाड़ी जड़ से काट बहाया।
अब तो है उसको समझाना,
यह गलती फिर न दोहराना,
रोजाना एक पेड़ लगाना,
भरपूर मेरा लाभ उठाना,
धरती हरी-भरी बनाना,
जीवन का आनंद उठाना ।
अगर सुख औऱ खुशहाली चाहो,
मेरी देखभाल का प्रण उठाओ।

‘सरस्वती वन्दना’

शालू
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

माँ सरस्वती, माँ भगवती
तेरे चरणों में सुखधाम है,
तुझे कोटि कोटि प्रणाम है।
माँ सरस्वती, माँ भगवती ....

तू विद्या का भन्डार है,
तेरे कंठ में स्वर झंकार है,
तू हंसती है तो लगता है,
जैसे छाई रितु बहार है।
माँ सरस्वती माँ भगवती ....

मस्तक पर मुकुट सहाए है,
हाथों में वीणा उठाएं है।
तू धारे हैं मां शुभ्रवस्त्र,
ममता का रूप धराए है।
माँ सरस्वती माँ भगवती ....

पुष्पों की गले में माला है,
तेरा वाहन हंस निराला है।
तेरा आसन है मां कमलफूल,
जो खिला हुआ मतवाला है
माँ सरस्वती माँ भगवती ....

'मेरी गुड्डी'

श्रीमती सुधा शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

कोई झकझोर जब जाता है उसे,
खिलखिलाकर हँसती जाती है...
गुड्डी भी मेरी थोड़ी पागल है,
जब रोना होता है, तब मुस्कुराती है।

कभी हाथ मरोड़ता है, कभी बाल खींचता है ज़माना,
कभी गर्दन दबाओ तो गीत गा कर सुनाती है...
गुड्डी भी मेरी थोड़ी पागल है,
जब रोना होता है, तब मुस्कुराती है।

मैं सोचती हूँ कभी.. कि पूछूं उससे,
क्या दर्द नहीं होता उसे
कभी रोना नहीं आता?
जब भी पूछने उसके पास जाती हूँ
वो आँखें झपकाती है और सरक कर दूर चली जाती है...
गुड्डी भी मेरी थोड़ी पागल है,
जब रोना होता है, तब मुस्कुराती है।

जब भी माँ को देखती हूँ, दुनिया से अकेले लड़ते,
चुप-चाप सारे जख्म सहते,
मुझे गुड्डी की याद आती है...
जब दिल में दर्द होता है, तो सर दर्द का बहाना बनाती है
माँ भी मेरी गुड्डी जैसी हैं,
जब रोना होता है, तब मुस्कुराती है
जब रोना होता है, तब मुस्कुराती है।

‘कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी’

उर्मिला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

हर जुबान पर सजती है हिन्दी,
इस महान भारत की भाषा है हिन्दी।
देश को जोड़े रखने वाली
ऐसी मजबूत धागा है, हिन्दी।
कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी।

हिन्दुस्तान की गौरवगाथा को दर्शाती,
एकता का प्रतीक है हिन्दी।
अपने गर्भ से जो सिर्फ फूल को जनती है,
ऐसी कामधेनु वसुंधरा है हिन्दी।
कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी।

आजादी के समय क्रांति जगाई,
ऐसी वीरों की बोली है हिन्दी।
जिसके बिना हिन्द स्तब्ध हो जाए,
ऐसी जीवन धारा है हिन्दी।
कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी।

हर काल की बोली थी, है, और रहेगी जो,
ऐसी कालजयी है हिन्दी।
मेरे नजरिए से देखोगे तो,
जीवन की परिभाषा है हिन्दी।
कुछ ऐसी है मेरी हिन्दी।

'सन्नाटा'

उर्मिला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारों ओर
क्या आदमी, आदमी से डर रहा है?
या कोई खतरा धीरे धीरे चला आ रहा है,
यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारों ओर .....

ऊफ ! ये कोरोना है या प्रकृति की कोई मार
या मानव निर्मित कोई आपदा ,
जो धीरे --धीरे मानवता को लील रही है
आज मानव का गरूर मिट रहा है,
यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारों ओर .....

अट्टालिकाओं में बैठा मानव
अपने आप से पूछ रहा
क्या मेरी यह मनमानी है या मूक प्रकृति की चेतावनी है?
यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारों ओर ......

परिंदे घूम रहे हैं आज़ाद ऐसे
आदमी कैद हुआ जाता है
चुपचाप जीने को आदमी मजबूर हुआ जाता है
अपनी दुनिया में खोया हुआ मानव अब गम से चूर हुआ जाता है
अहंकार त्याग अब मानव, कब तक इतराएगा
जब तू इस धरती से उठेगा, तो रोने वाला भी कोई नहीं आयेगा
यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारों ओर ..
यह सन्नाटा क्यों पसरा है चारो ओर.........

ऑडिट दिवस पुरस्कार वितरण

निर्णय लेना

शिवम् शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

हमारे जीवन में प्रबंधन के दृष्टिकोण से या दूसरे शब्दों में कुछ भी सार्थक करने के लिए निर्णायक क्षमता का प्रबल होना अति आवश्यक है। यदि मुझे एक अच्छे प्रबंधक के गुणों को एक शब्द में व्यक्त करना हो, तो मैं कहूँगा कि यह निर्णायकता पर निर्भर करता है।

किसी भी प्रकार का निर्णय लेने की क्षमताओं को बेहतर बनाने का तरीका सम्बन्धित विषय और उस स्थिति के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाना है। यदि हम लगातार प्रयास करें तो उससे अर्जित अनुभव के द्वारा हम सभी अपनी निर्णायक क्षमता, बेहतर धारणा, सोचने की क्षमता एवं दूरदर्शिता को उन्नत बना सकते हैं।

सफल व्यक्ति को अपने जीवन में निश्चित होना सीखना, अभ्यासरत् रहना और तथ्यों को प्राप्त करने के बाद तुरन्त निर्णय लेना इन तीन गुणों को अवश्य ही शामिल करना चाहिए। निर्णय लेने में धीमी गति या बार-बार निर्णय बदलने की जो अवधारणा है अर्थात् मन न बना पाना, प्रगति में एक बड़ी बाधा है।

नीचे दो प्रकार की परिस्थितियों का विवरण दिया गया है, जिनके लिए सामान्य रूप से हम सभी को निर्णय लेने पड़ते हैं। वे इस प्रकार हैं :-

1) दिन प्रतिदिन आने वाली समस्याएँ (परिचालन)।
2) दीर्घकालिक योजनाओं के लिए या किसी विशेष स्थिति के लिए घटनाओं का निर्माण करना या परिणाम स्वरुप उससे सम्बंधित भविष्य को आकार देना (रणनीतिक)।

उपर्युक्त परिस्थितियों में किसी भी निर्णय को लेने के लिए :-

1) यदि यह समस्या से सम्बंधित है तो समस्या को सही ढंग से पहचानें, मूल्याकन करें और समझें। प्राप्त जानकारी की जांच करें की वह सही, विश्वसनीय, प्रासंगिक और पर्याप्त है कि नहीं, अन्यथा सभी प्रयास नकारात्मक परिणामों में बदल सकते हैं।
2) रणनीतिक निर्णयों के मामले में उद्देश्य को स्पष्ट रूप से, विशेष रूप से और विस्तृत रूप से परिभाषित करें।

3) पूरी स्थिति का अच्छी तरह अध्ययन करें और उसके परिणामों के बारे में कल्पना करें।

4) अध्ययनोपरांत, अधिमानतः उपलब्ध विकल्पों को कही लिख लें।

5) अब संभावित परिणामों, उनके नतीजों, उनके फायदे और नुकसान का विश्लेषण कर बेहतर व्यक्तियों जिन पर आप विश्वास करते हैं, के द्वारा मूल्यांकन करवाऐं।

6) अंततः सम्बद्ध व्यक्तियों की सलाह लें जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं।

सामान्यतः, निम्नलिखित कारणों की वजह से हमारे निर्णय विफल हो जाते हैं :-

1) समस्या को पहचानने या सही ढंग से उसकी व्याख्या न कर पाना, परिणामतः समस्या के मूल कारण का निदान न कर पाना।

2) अपर्याप्त और गलत जानकारी, इस प्रकार किसी विशेष निर्णय से अपेक्षित परिणामों को समझना या पूर्वानुमान का संभव न हो पाना।

3) सर्वोत्तम निर्णय लेने की गंभीरता का अभाव | प्रायः इसका उद्देश्य एक आसान और त्वरित उत्तर ढूंढना होता है क्यों कि मौजूदा स्थिति में इसका उचित समाधान ढूँढना अधिक कठिन है।

4) व्यक्तिगत लाभ या भावनात्मक संबंधों जैसे व्यक्तिगत कारणों को अधिक व्यवहारिक विचारों पर प्राथमिकता देना।

यदि समस्या का कारण सही ढंग से पता नहीं लगाया गया तो एक छोटा सा निर्णय भी गलत साबित हो सकता है | इस बात को निम्नलिखित कहानी के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है, जो कि समस्या का सही निदान करने में असमर्थता एवम् समय के साथ धन की बर्बादी के बारे में समझने का एक अच्छा उदहारण है –

एक फैक्ट्री की छत से पानी रिस रहा था, जाहिर तौर पर यह इतना आसान लग रहा था कि कार्यकारी प्रभारी ने समस्या की जड़ तक पहुचे बिना ही एक मिस्त्री को बुलाया और उससे एक अनुमान देने को कहा| परिणामतः, बहुत सारा सीमेंट और रेत मामूली खर्च पर खरीद लिया गया। मरम्मत पूरी होने के बाद पानी रिसने वाले स्थान पर पुनः पानी डाला गया और सब कुछ ठीक पाया गया | कुछ ही समय बाद अगली बारिश के दौरान पानी फिर से पहले की तरह प्रचुर मात्रा में रिसने लगा।

समस्या का विश्लेषण करने के उपरान्त यह पता चला कि रिसाव किसी अन्य स्थान पर फ़ॉल्स सीलिंग पर जमा होने के कारण हो रहा था | किसी ने भी विस्तार में जाने बिना फॉल्स सीलिंग आदि की जांच करना जरुरी नहीं समझा और ठीक उसी स्थान पर मरम्मत की, जहाँ से पानी रिस रहा था।

इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि एक अच्छे प्रबंधन के लिए कुशल निर्णायक क्षमता का होना अति आवश्यक है और इसे उल्लिखित बिन्दुओं का पालन करके सर्वोत्तम बनाया जा सकता है।

खेलों में रक्षा

क्र.सं.	नाम/पदनाम	कार्यालय	खेल/प्रतियोगिता एवं प्राप्त स्थान
1.	भाव्या ऋषि, लेखापरिक्षक, नौसेना, नई दिल्ली	महानिदेशक लेखापरीक्षा, नौसेना, नई दिल्ली	1. भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के नोर्थ ज़ोन बैड़मिंटन टूर्नामेंट 2022-23 में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 2. अंतर मंत्रालय बैड़मिंटन टूर्नामेंट 2022-23:- i. महिला एकल – प्रथम स्थान ii. महिला युगल – प्रथम स्थान iii. महिला टीम – प्रथम स्थान iv. मिश्रित युगल – द्वितीय स्थान इसी टूर्नामेंट में इन्हें उच्च कोटि के ख़िताब से भी नवाज़ा गया। 3. भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के इन्टर ज़ोनल बैड़मिंटन टूर्नामेंट 2022-23 में i. महिला एकल – प्रथम स्थान ii. महिला युगल – प्रथम स्थान 4. अखिल भारतीय सिविल सेवाएं बैड्मिंटन टूर्नामेंटन 2022-23 में महिला एकल में प्रथम स्थान 5. योनक्स सनराईज़ केन्द्रिय ज़ोन बैंड़मिंटन प्रतियोगिता में:- i. महिला एकल – प्रथम स्थान ii. महिला टीम – द्वितीय स्थान

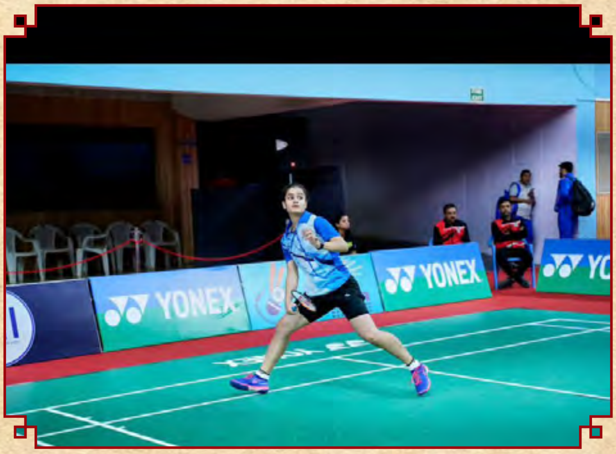

लेखापरीक्षा विभाग

क्र.सं.	नाम/पदनाम	कार्यालय	खेल/प्रतियोगिता एवं प्राप्त स्थान
1.	श्रीमती विदुषी वत्स, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली	महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली	1. 84वां वरिष्ठ राष्ट्रीय एवं अन्तर राज्यीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में बतौर दिल्ली महिला टीम की कोच बनकर नेतृत्व किया एवं महिला टीम वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। 2. दिल्ली स्टेट एवं अंतर्राज्यीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में महिला टीम वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। 3. 37वें नेशनल गेम्स गोवा में टेबल टेनिस प्रतियोगिता में बतौर दिल्ली महिला टीम की कोच बनकर नेतृत्व किया।

भारत की जी- 20 अध्यक्षता पर एक विचार

आनंद नाग
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

जी-20 (20 के समूह) की स्थापना वर्ष 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों को वैश्विक, आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए की गई थी। जी-20 को बाद मे राज्य/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर अपग्रेड किया गया था और इसे "अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच" नामित किया गया था। जी-20 ने शुरु में केवल व्यापक आर्थिक नीति पर अपना ध्यान केंद्रित किया, परन्तु आगे चलकर इसने व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत् विकास, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, भ्रष्टाचार विरोध आदि को शामिल करने के लिए अपने दायरे का और अधिक विस्तार किया है।

जी-20 की संगठनात्मक संरचना

वर्तमान में जी-20 में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया, गणराज्य, मैक्सिको, रुस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रिका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं। जी-20 सदस्य वर्तमान में विश्व सकल घरेलू उत्पाद के 80 प्रतिशत से अधिक, वैश्विक व्यापार के 75 प्रतिशत और वैश्विक जनसंख्या के 60 प्रतिशत का हिस्सा हैं।

जी-20 का कोई निजी चार्टर या सचिवालय नहीं है। प्रत्येक वर्ष के शिखर सम्मेलन के एजेंडों को निर्धारित करने के लिए इससे पहले और आने वाले वर्ष में प्रेसीडेंसी रखने वाले देशों द्वारा तैयार किया जाता है। जी-20 प्रक्रिया का नेतृत्व सदस्य देशों के 'शेरपाओं' द्वारा किया जाता है । यह शेरपा सदस्य, देशों के नेताओं के निजी दूत होते हैं। शेरपा, वर्ष के दौरान बातचीत की देखरेख करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा मुद्दों पर चर्चा करते हैं और जी-20 के मूल कार्य का समन्वय भी करते हैं।

- ## भारत की जी-20 अध्यक्षता

वर्ष 2011 के बाद से, जी-20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक घूर्णन प्रेसीडेंसी के नेतृत्व में आयोजित किया जाता है। हमारा भारत, 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता करने वाला है।

प्रतिनिधिमंडलों के 43 प्रमुख-जी 20 में अब तक का सबसे बड़ा मंडल, इस वर्ष सितंबर में नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाला है । इस वर्ष के जी-20 का 'लोगो' भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों-केसरिया, सफेद, हरा और नीला से प्रेरणा ग्रहण करता है। यह भारत के राष्ट्रीय फूल 'कमल' के साथ पृथ्वी को जोड़ता है एवं चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है ।

भारत के जी-20 प्रेसीडेंसी का विषय "वसुधैव कुटुम्बकम्" या "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" है। भारत के लिए, जी-20 प्रेसीडेंसी "अमृतकाल" की शुरुआत का भी प्रतीक है। 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से शुरु होने वाली आगे के 25 वर्ष की अवधि, यानि भारत की स्वतंत्रता की शताब्दी तक, एक भविष्यवादी, समृद्ध, समावेशी और विकसित समाज, जिसके मूल में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण है, इस 25 वर्ष के समय को हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने 'अमृतकाल' का नाम दिया है।

जी-20 की बैठकें केवल नई दिल्ली या अन्य महानगरों तक ही सीमित नहीं रहेंगी। बल्कि हमारा भारत "वसुधैव कुटुम्बकम्" "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" की अपनी जी-20 अध्यक्षता की थीम से प्रेरणा लेते हुए, 50 से अधिक अलग-अलग शहरों में 200 से अधिक बैठकों का आयोजन भी करेगा। वर्कस्ट्रीम और जी-20 प्रतिनिधियों औऱ मेहमानों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक झलक पेश करने और उन्हें एक अद्वितीय भारतीय अनुभव प्रदान करने का अवसर प्राप्त होगा।

- **भारत की जी-20 प्राथमिकताएँ निम्नलिखित है:**

हरित विकास, जलवायु, वित्त और लाइफ (Life–लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट)

जी-20 का नेतृत्व करने का अवसर ऐसे समय में आया है जब कोविड-19 महामारी के कारण हमारे अस्तित्व पर खतरा बढ़ गया है। इस संबंध में, जलवायु परिवर्तन भारत के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता है।

यह समझते हुए कि जलवायु परिवर्तन का मुद्दा उद्योग, समाज और अन्य क्षेत्रों में व्याप्त है, भारत दुनिया को लाइफ (life–लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) एक व्यवहार- आधारित आंदोलन) प्रदान करता है जो हमारे देश की समृद्ध, प्राचीन स्थायी पंरपराओं से उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है। यह भारत के जी-20 विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वन अर्थ के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

त्वरित, समावेशी और लचीला विकास

सतत् विकास के लिए एक त्वरित, लचीला और समावेशी विकास एक आधारशिला है। अपने जी-20 प्रेसीडेंसी के दौरान, भारत का लक्ष्य उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना है जिनमें संरचनात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता है। इसमें वैश्विक व्यापार में 'एम एस एम ई' के एकीकरण में तेजी लाने, विकास के लिए व्यापार की भावना लाने, 'श्रम अधिकारों' को बढ़ावा देने और श्रम कल्याण को सुरक्षित करने, वैश्विक कौशल अंतर को दूर करने और समावेशी कृषि मूल्य श्रृंखला और खाद्य प्रणाली आदि का निर्माण करने की महत्वाकांक्षा शामिल है।

- ## तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना

भारत प्रौद्योगिकी के लिए एक मानव-केंद्रित दृष्टिकोण में अपने विश्वास को आगे बढ़ा सकता है। साथ ही कृषि से लेकर शिक्षा तक के क्षेत्रों में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, वित्तीय समावेशन और तकनीक-सक्षम विकास जैसी प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अधिक से अधिक ज्ञान-साझाकरण की सुविधा प्रदान कर सकता हैं।

- ## महिलाओं के नेतृत्व में विकास

महिला सशक्तीकरण और प्रतिनिधित्व भारत के जी-20 विचार-विमर्श के मूल में होने के साथ, भारत समावेशी विकास और आर्थिक विकास को उजागर करने के लिए जी-20 मंच का उपयोग करने की उम्मीद करता है। इसमें सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को आगे लाने और अग्रणी पदों पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

निष्कर्ष

भारत ने सांस्कृतिक पहलों की एक श्रृंखला के साथ अपने प्रेसीडेंसी कार्यकाल के एजेंडे को शुरु किया, जिसमें विभिन्न जनभागीदारी गतिविधियां, देश भर के 75 शैक्षणिक संस्थानों के साथ एक विशेष यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम, जी-20 लोगो और रंगों के साथ ए.एस.आई. के 100 स्मारकों को रोशन करना, और नागालैंड में होम्बिल उत्सव में जी-20 का प्रदर्शन। सैंड आर्किटेक्ट श्री सुदर्शन पटनायक ने ओडिशा के पुरी समुद्र तट पर भारत के जी-20 लोगो की सैंड आर्ट भी बनाई। वर्ष भर चलने वाले कैलेंडर में कई अन्य कार्यक्रम, युवा गतिविधियों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और संबंधित शहर के स्थलों और परंपराओं को प्रदर्शित करने वाले साइट भ्रमण की भी योजना बनाई गई है। जी-20 पहल दुनिया की सबसे शक्तिशाली 19 अर्थव्यवस्थाओं और यूरोपीय संघ का गठबंधन है। भारत ने पहले ही कुछ पहलुओं में बढ़त ले ली है, विशेष रुप से डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं और उनकी प्रौद्योगिकी, आत्मनिर्भरता या आत्मनिर्भर भारत, और वैक्सीन कूटनीति। फलस्वरुप, जी-20 का मंच भारत के लिए तैयार है अपने विकास को प्रदर्शित करने और अनेक ऐसे मुद्दे जिनसे पूरी दुनिया चिंतित है जैसे कि आंतकवाद, मुद्रास्फीति एवं ग्लोबल वार्मिंग पर अपने संभावित समाधानों को दुनिया के सामने पेश करने में सुनहरा अवसर प्रदान करेगा।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत

सुदेश कुमारी
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा निरंतर प्रयास जारी है, जिनमें सबसे सराहनीय कदम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन करना है। वर्ष 2021 में वाराणसी से प्रारंभ किए गए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की कड़ी में सूरत में आयोजित किए गए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का दूसरा स्थान है। अपने कार्यालय में हिंदी अधिकारी होने के नाते मुझे भी इस भव्य आयोजन में प्रतिभागिता का सुअवसर प्राप्त हुआ। जैसा कि सभी को विदित है कि सितंबर माह में राजभाषा हिंदी के लिए, हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर 2022 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

गृह मंत्रालय, राजभाषा से प्राप्त पत्र के अनुसार सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को सबसे पहले अपना नाम पंजीकरण कराना एवं उसके पश्चात निर्धारित केद्रों से प्रवेश पत्र प्राप्त करना था। मैने भी पंजीकरण किया और सम्मेलन शुरु होने से एक दिन पहले (13.09.2022) सूरत से ही प्रवेश पत्र प्राप्त करने का निर्णय किया। अत: 12.09.2022 को हवाई यात्रा द्वारा सूरत जाने का कार्यक्रम बनाया गया।

वर्षा ऋतु और तटीय क्षेत्र होने के कारण कोलकाता में कुछ दिनों से बारिश हो रही थी और यही हाल सूरत का भी था। मौसम पूर्वानुमान के अनुसार कुछ और दिन भारी बारिश का पूर्वानुमान था। हमारी यात्रा जब शुरु हुई तब भी खूब बारिश हो रही थी। महानगरों की बारिश और ट्रैफिक जाम का पुराना रिश्ता है। इसी कारण घर से जल्दी निकले ताकि समय से हवाई अड्डा पहुँच जाएँ। समय से हवाई अड्डा पहुँच गए और वहाँ अपने अन्य साथियों से भी भेंट हुई। अभी तक तो सब बहुत अच्छा लग रहा था। हवाई अड्डे पर लाउन्ज में कुछ जलपान भी किया। शाम 4 बज कर 10 मिनट पर हमारी यात्रा शुरु होनी थी जिसके लिए 3.30 बजे हम हवाई जहाज में अपना-अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। ठीक समय पर हवाई जहाज ने अपने गंतव्य के लिए उड़ान भरी। घनघोर वर्षा हो रही थी। 30 मिनट की यात्रा के बाद ही हवाई जहाज में गड़गड़ाहट शुरु हो गई। 2 घंटे 55 मिनट की यात्रा में भयंकर गड़गड़ाहट महसूस की। सभी यात्रियों के चेहरों पर तनाव दिखाई दे रहा था। पूरी यात्रा के दौरान

भगवान को याद करते रहे। भगवान का शुक्र है कि सही सलामत सूरत पहुंचे। सांय 6.55 पर हवाई जहाज सूरत पहुँचा । जब बाहर निकले तो यहां भी वही हाल था जो कोलकाता में था, यानि भारी बारिश। हालांकि, टैक्सी वाले लोग खुद आकर सवारियों को पूछ रहे थे। हम भी एक टैक्सी में सवार हो लिए और बढ़ चले अपने अगले पड़ाव सिग्नेचर होटल। जहाँ हम दो दिन रुकने वाले थे। हमारे एक बंधु ने हमारे रुकने के लिए वहाँ एक कमरा पहले ही बुक करवा दिया था। भला हो उनका, नहीं तो बारिश में एक अनजान शहर में होटल की तलाश करना वो भी रात के समय एक कठिन कार्य हो सकता था।

रात होटल में काटी और सुबह जल्दी उठे कि जल्दी से आकर अपना प्रवेश पत्र प्राप्त करें। प्रवेश पत्र वितरण के लिए भी सम्मेलन के आयोजन स्थल को ही निर्धारित किया गया था। स्टेडियम पहुंचे और देखा कि लंबी लाइन लगी हुई हैं। खैर कुछ समय पश्चात हमें भी प्रवेश पत्र प्राप्त हुआ। अब तक दोपहर का समय हो चुका था पर इंद्र देव अपने मेंघो से निरंतर वर्षा से धरती माँ को भिगो रहे थे। हम ने जैसे-तैसे यहाँ से एक टैक्सी पकड़ी और निकल लिए अपने होटल की तरफ। शाम को होटल के पास ही घूमे यह सोच कर कि, दूर निकले तो कहीं फिर से बारिश होने की स्थिति में भीग जाएंगे।

14.09.2022 का दिन आ गया। जिस दिन दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन प्रारंभ होना था। प्रात: 9.30 बजे मैनें भी आयोजन स्थल में पहुँचकर अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

हिन्दी दिवस 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी ने किया। इस शुभ अवसर पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने हिन्दी से हिंदी वृहद शब्दकोश “हिंदी शब्द सिंधु, संस्करण-1” तथा विश्वस्तरीय अनुवाद टूल “कंठस्थ 2.0” का भी लोकार्पण किया।

प्रथम दिवस (14.09.2022) में प्रथम सत्र में श्री हरिवंश, श्री भर्तृहरि महताब, श्री सत्य नारायण जटिया ने विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा पर अपने बहुमूल्य विचारों से उपस्थितजनों को अवगत कराया। प्रथम दिवस (14.09.2022) द्वितीय सत्र में युवाओं को 'गर्व की अनुभूति कराती हिन्दी' जैसे विषय पर श्री निशांत जैन, श्री गंगा सिंह राजपूत जैसे युवा वरिष्ठ अधिकारियों एवं सिनेमा जगत की जानी पहचानी हस्तियों पद्म श्री प्रसून जोशी एवं अभिनेता श्री पंकज त्रिपाठी ने सभा को संबोधित कर समां बांध दिया।

द्वितीय दिवस (15.09.2022) में प्रथम सत्र “महात्मा गांधी का भारतीय चिंतन औऱ राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान” एवं “भाषाई समन्वय का आधार है हिन्दी” पर वक्ताओं के रुप में जाने माने गणमान्य व्यक्तियों जैसे कि प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी, श्री राम मोहन पाठक, श्री चामी कृष्ण शास्त्री द्वारा अभिभाषण दिया गया। द्वितीय सत्र के विषय भारतीय सिनेमा और हिन्दी पर प्रोफेसर संजय दिवेद्वी, ए.के तोमर, महेश मांजरेकर, डा. चन्द्र प्रकाश दिवेद्वी ने श्रोताओं को संबोधित किया।

कुल मिला कर यह दो दिवसीय सम्मेलन काफी लाभदायक एवं ज्ञानवर्धक रहा जिसमें राजनीति से लेकर सिनेमा जगत की जानी मानी हस्तियाँ मौजूद रहीं। भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए किए जाने वाले प्रयासों की जितनी प्रंशसा की जाए, कम है।

ऐसे कार्यक्रम न केवल हिंदी को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं बल्कि हिंदी के क्षेत्र में उपलब्धियों के अवसरों से प्रत्येक भारतवासी को परिचित करवाते हैं और जिस शहर में आयोजन होता है वहां के जनमानस, खानपान, एवं संस्कृति को कुछ हद तक समझने में सहायक होते हैं। पूरे भारत में एकत्र होने वाले हिंदी से जुड़े लोगो को आपस में मिलने एवं विचारों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। कम शब्दों में कहा जाए तो यह कहा जाएगा कि ऐसे आयोजन विभिन्न रुपों में हर तरीके के आदमी के लिए सहायक होते हैं।

आयोजन के समापन के साथ ही सब प्रतिभागी अपने-अपने स्थानों पर लौट गए जिनमें से कुछ उसी रात अपने-अपने गृह नगर को चले गए। हम भी अगले दिन 16.09.2022 को कोलकाता के लिए निकल पड़े मन में इस उम्मीद के साथ कि आज कोई गड़गड़ाहट ना हो औऱ सकुशल वापस कोलकाता पहुँचे। कुल मिला कर अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभागिता करना काफी लाभप्रद रहा। आशा करती हूँ कि हिन्दी के विकास एवं प्रचार, प्रसार के लिए भविष्य में भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे और हम इन के माध्यम से और ज्ञान अर्जित करते रहेंगे।

क्रिकेट

जितेन्द्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

प्रस्तावना

क्रिकेट, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई देशों द्वारा खेला जाने वाला एक पेशेवर स्तर का आउटडोर खेल है। इस बाहर खेले जाने वाले खेल में 11 खिलाड़ियों की दो टीमें होती हैं। क्रिकेट तब तक खेला जाता है जब तक 50 ओवर पूरे न हो जाएं। इससे जुड़े नियम-कानून का संचालन तथा नियम अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद और मेर्लबॉर्न क्रिकेट क्लब द्वारा किया जाता है। यह खेल टेस्ट मैचों और एक दिवसीय तथा टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों के रुप में खेला जाता है। सर्वप्रथम यह खेल 16 वीं शताब्दी के दक्षिणी इंग्लैड में खेला जाता था। हालाँकि 18 वीं शताब्दी के दौरान क्रिकेट का विकास इंग्लैड के राष्ट्रीय खेल के रुप में हुआ।

क्रिकेट का इतिहास

ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के दौरान यह खेल बाहर के देशों में खेला जाने लगा औऱ 19 वीं शताब्दी में पहला अंतर्राष्ट्रीय मैच आईसीसी द्वारा 10-10 सदस्यों की दो टीमों में कराया गया। क्रिकेट एक काफी प्रसिद्ध खेल है जो इंग्लैड, भारत, आस्ट्रेलिया, दक्षिण-अफ्रीका आदि जैसे दुनिया के कई सारे देशों में खेला जाता है।

भारत में छोटे बच्चे इस खेल के दीवाने है औऱ वे इसे छोटी सी खुली जगहों में खेलते हैं, खासतौर से सड़क और पार्क में। अगर इसे रोज खेला और अभ्यास किया जाये तो ये बहुत ही आसान खेल है। क्रिकेट खिलाड़ियों को अपने खेल में सुधार लाने के लिए अभ्यास की जरुरत पड़ती है जिससे वे छोटी-छोटी गलतियों को दूर कर सकें और पूरे प्रवाह के साथ इसे खेल सकें।

पिछले मैच का अनुभव

पिछले रविवार को हमारा मैच था। जहां हमें दिल्ली की सबसे मजबूत टीम से मुकाबला करना था। टीम

के पास बहुत मजबूत आँकड़े थे। हमारे पास कई नए खिलाड़ी थे जो आखिरी बार लगभग 4-5 साल पहले खेले थे। टीम का कप्तान होने के नाते मेरे कंधो पर बड़ी जिम्मेदारियाँ थीं। हमने टॉस जीता और बल्लेबाजी करने का फैसला किया । हम अच्छी शुरुआत नहीं कर सके और दो विकेट जल्द ही गंवा दिये । उसके बाद, सचिन और रवि के बीच 55 रन की बेहद मजबूत साझेदारी हुई। 9 ओवर में हमारा स्कोर 2 विकेट के नुकसान पर 78 रन था। सचिन ने स्वीप शॉट खेला और विकेटकीपर के हाथों अपना विकेट गंवा बैठे । इसी ओवर में रवि भी आउट हो गए। स्कोर 4 विकेट के नुकसान पर 85 रन था। हम ऐसी स्थिति में थे जहां हम 20 ओवर से पहले आउट हो सकते थे। मैने रोहित के साथ टीम का नेतृत्व किया और 15 ओवर में टीम को 120 रनों तक पहुंचाया। आखिरकार टीम, 20 ओवर में 155 रन पर आउट हो गई। जवाब में, प्रतिद्वंदी टीम 12.3 ओवर में 97 रन पर आउट हो गई। यह एक शानदार मैच था और मैच के बाद का जश्न श्री राहुल बोस (बॉडी सेंसेशन सप्लीमेंट के मालिक) द्वारा आयोजित और प्रायोजित किया गया था ।

निष्कर्ष

क्रिकेट ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के खेल से स्वास्थ्य और उत्साह तो बढ़ता ही है, साथ ही स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का भी विकास होता है। क्रिकेट के खेल से इसके साथ-साथ आपसी एकता तथा भाईचारा का विकास भी होता है। विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट के समय समूचा विश्व जैसे एक परिवार ही बन जाता है और यह क्रिकेट के खेल की एक बड़ी उपलब्धि है।

ऑडिट दिवस वॉकेथोन

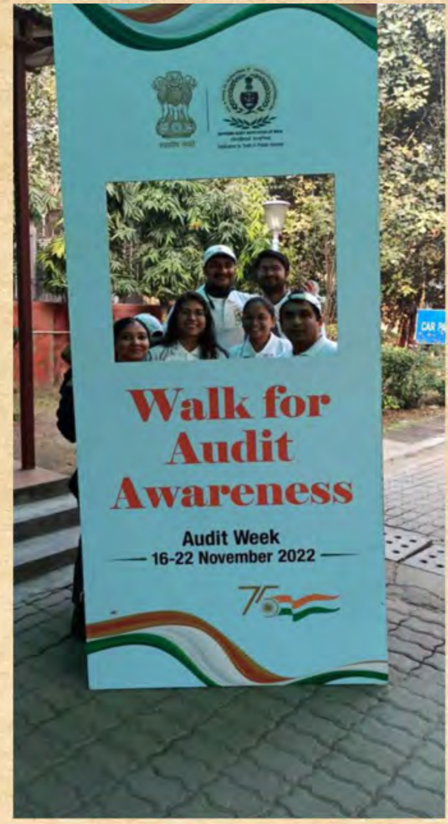
Walk for Audit Awareness
Audit Week
16-22 November 2022

ऑडिट दिवस
Audit Diwas
16 November 2022

काल करे सो आज कर

श्रीमती विदुषी वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

दृश्य (एक छोटा सा घर है। घर में चहल-पहल हो रही है। एक चारपाई पर एक 5 साल का लड़का सो रहा है। एक आठ साल की लड़की उस औरत की मदद कर रही है। औरत बच्चे को जगाती है।

शालू, बब्लू बेटा उठ जा । कब तक सोता रहेगा। देख सूरज सिर पर चढ़ आया है। याद नहीं, आज तेरा इस स्कूल में दाखिला करवाना है?

बब्लू: माँ मुझे इस स्कूल नहीं जाना। आज मेरा बैट बल्ले का मैच है।

शालू: देख, सामने वाले, सोनू-मोनू भी तो स्कूल जाते हैं। अरे अगर तू उठेगा नहीं तो पढ़ेगा कैसे, बिना पढ़े तू बड़ा आदमी कैसे बनेगा? चल देर मत कर ।

शालू: वो तेरे लिए खाने का डिब्बा तैयार कर रही है। तू उठ और कपड़े पहन ले। (शालू बब्लू को स्कूल की वर्दी पकड़ाती है)

बब्लू: माँ तुझे पता है ना कि मुझे नीला रंग नहीं पसंद। जा, इसे बदलवा कर दूसरा रंग ले आ। (बब्लू वर्दी को एक ओर रख देता है)

शालू: यह स्कूल की वर्दी है। सब बच्चे यही पहनते हैं।

बब्लू: पर चुन्नी दीदी तो यह नहीं पहनती ।

शालू: क्योंकि वो स्कूल नहीं जाती।

बब्लू: क्यों?

शालू: बस बस ज्यादा ना पूछ । ये कपड़े पहन ले।

तेरा बापू, तुझे स्कूल ले जाएगा।

(बब्लू: अनमने मन से उठता है व घृणा की दृष्टि से कपड़ों को उठाता है औऱ नहाने चला जाता है।)

थोड़ी देर बाद ....

शालू: बब्लू बेटा, स्कूल में कोई तेरा नाम पूछे तो बब्लू मत बताना, तेरा नाम राघव है। समझा?

बब्लू: हाँ माँ।

शालू: (चुन्नी से) ला, खाने का डिब्बा बब्लू को दे दूँ।

शालू: (बब्लू से) सारे सवालों का सही से जवाब देना। जा, तेरा बापू तेरा इंतजार कर रहा है।

(बब्लू भागकर अपने पिता का हाथ पकड़कर चलने लगता है। माँ बब्लू को हाथ हिलाकर विदा करती है। चुन्नी भी वहाँ पहुँच जाती है।

चुन्नी: माँ बब्लू स्कूल गया है ना, मैं भी स्कूल जाना चाहती हूँ। मेरा भी पढ़ने का मन करता है।

शालू: अरे स्कूल जाकर क्या करेगी । घर पर बैठकर घर के काम काज सीख । तुझे आगे जाकर चूल्हा चौका ही करना है। बेटियों की शोभा घर में ही होती है ।

(घर के अंदर आकर)

चुन्नी: पर माँ मुझे भी बब्लू की तरह पढ़ना है ।

शालू: देख मैंने तो कोई पढ़ाई नहीं की है। तेरी दादी, नानी किसी ने भी पढ़ाई नहीं की है, पर फिर भी हम सब जी रहीं है ना । तू क्या मर जाएगी?

(चुन्नी मन मसोस कर रह जाती है। वह एक कोने में खड़ी हो जाती है। तभी दादी आ जाती है। उनके हाथ में पूजा की थाली है।)

दादी: शालू, चुन्नी, बब्लू । आओ प्रसाद ले लो।

(शालू व चुन्नी दादी जी के पास जाते हैं)

दादी: ये बब्लू अपने बैट बल्ले के मैच में गया है क्या? तीन दिनों से अपने मैच की तैयारी कर रहा है।

दादी: (प्रसन्न होकर) क्या! भगवान उसे लंबी उमर दे उसे बड़ा आदमी बनाए, उसकी हर इच्छा पूरी करे। (दादी पूजा की थाली एक ओर रख देती हैं। शीला रसोई में चली जाती है। तभी चुन्नी दादी के पास आती है।)

चुन्नी: दादी-दादी मुझे भी स्कूल जाना है।

दादी: अरे बेटा, मैं तो तेरी माँ को समझा-समझाकर थक चुकी हूँ कि तुझे भी पढ़ना चाहिए।

चुन्नी : दादी, माँ को फिर से समझाओ ना

दादी: चल तू कहती है तो, उसे एक बार फिर समझा कर देखती हूँ। (तभी शालू चाय का कप लेकर आती है, चुन्नी थोड़ा सा हट जाती है।)

दादी: बहू, मैं तुझे फिर से कह रही हूँ कि चुन्नी की उम्र बढ़ती जा रही है, उसे पढ़ने भेज। मैं नहीं चाहती कि उसकी जिंदगी भी हमारी तरह रसोई मे बीते ।

शालू: माँ जी, भगवान तो औरत को घर के काम करने के लिए ही बनाता है। पढ़ाई लिखाई तो मर्द करते हैं. हमारा काम सिर्फ घर के काम-काज करना है।

दादी: अरे, हमारे पड़ोस की राधा को देख, पढ़ाई करके मास्टरनी बन गई है। इंदिरा गांधी भी तो औऱत होकर प्रधानमंत्री बनी थीं।

(तभी शालू का पति रमेश, बब्लू को स्कूल छोड़कर वापस आता है। बातचीत का विषय बदल जाता है)

शालू: बब्लू के बापू, स्कूल कैसा है?

रमेश: स्कूल तो बहुत बड़ा है।

शालू: बब्लू रोया तो नहीं।

रमेश: रोया तो, पर उसकी मास्टरनी इतनी अच्छी थी। वो बब्लू को अंदर ले गई। वहाँ बहुत सारे खिलौने और झूले थे।

(चुन्नी मन ही मन में स्कूल की कल्पना कर रही थी ।)

शालू (धीरे से) माँ जी, फिर वही बात लेकर बैठ गई हैं कि चुन्नी को भी स्कूल भेजो। मैं तो समझा समझाकर हार गई हूँ।

रमेश: अम्मा, क्यों चुन्नी को पढ़ाने की जिद कर रही हो, लड़कियाँ तो पराया धन होती हैं। उन्हें तो दूसरे घर जाकर भी तो चूल्हा-चौका ही करना होता है। इसमें पढ़ाई की क्या जरुरत है?

दादी: ये कैसी बातें कर रहा है रमेश, तुझे पता नहीं जमाना कितना बदल गया है। अगर चुन्नी भी पढ़ लेगी, तो अच्छे घर में शादी होगी।

(तभी दरवाजे से रमेश का साथी सुरेश आता है)

सुरेश: अरे रमेश, दफ्तर जाने के लिए देर हो रही है। आज तो मै अपनी बेटी रेनू का स्कूल में दाखिला करवा आया हूँ।

रमेश: (हैरान होकर) अच्छा! मैंने भी बब्लू का दाखिला करवा लिया है।

सुरेश: और चुन्नी?

रमेश: अरे, लड़कियाँ थोड़ी ना पढ़ती हैं।

सुरेश: अरे, तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया? कौन से युग में जी रहे हो? आजकल तो डॉक्टर, वकील, टीचर, पुलिस, अधिकारी जैसे सभी क्षेत्रों में औरतें नाम कमा रही हैं। तुमने किरण बेदी, कल्पना चावला, मेधा पाटेकर अमृता प्रीतम आदि औरतों का नाम तो सुना ही होगा।

रमेश: (शर्म से) हाँ, हाँ। मैं जानता हूँ।

सुरेश: ये सब औरतें घर भी संभालती हैं और काम भी करती हैं। कुछ सीखो इनसे और चुन्नी का भविष्य खराब मत करो।

रमेश: तब तो मैं कल ही जाकर चुन्नी का दाखिला करवा आऊँगा।

सुरेश: अरे, कल पर क्यों छोड़ता है अभी चला जा। सुना नहीं काल करे सो आज कर।

मैं मालिक से कह दूँगा कि तू चुन्नी का दाखिला करवाने गया है।

रमेश : क्या ! सच।

रमेश के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है।

मैं स्त्री हूँ

श्री संजीव कुमार
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

स्त्री न होती जग म्हं , सृष्टि को रचावे कौण ।
ब्रह्मा विष्णु शिवजी तीनों मन म्हं धरे बैठे मौन ।
एक ब्रह्मा नैं शत् रूपा रच दी, जबसे लागि सृष्टि हौण ।।

मैं स्त्री हूँ, सम्पूर्ण मनुष्य जाति की जन्मदाता। मेरे बिना मनुष्य जाति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सत्य है की पुरुष का भी इसमें कुछ योगदान है, परंतु परमेश्वर ने मुझे इस योग्य समझा है कि मैं ही मनुष्य को जन्म देने और उसके पूर्णतया स्वयं पर निर्भर होने तक उसका पालन करने मे सक्षम हूँ क्योंकि इस कार्य को पूर्ण करने के लिए ईश्वर ने मुझे बनाया ही इस प्रकार है।

पुरुष और स्त्री, दोनों ही मनुष्य जाति के हैं परंतु पुरुष ने सदैव मुझे दूसरे दर्जे का स्थान ही दिया है। मैं पूछती हूँ की पुरुषों और स्त्रियों में क्या भिन्न है जो उसे मुझसे उच्च श्रेणी का बनाता है? तुम कहोगे पुरुष बलवान है ! स्त्रियों मे इतनी क्षमता नहीं की वह अपनी और अपनी संतानों की रक्षा कर सके। बिल्कुल सत्य! पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि पुरुष स्त्री से श्रेष्ठ है। अपितु इसका अर्थ यह हुआ कि स्त्री की रचना पुरुष के लिए नहीं, बल्कि पुरुष की रचना स्त्री के लिए लिए हुई है। यदि मैं कहूँ कि सत्य तो यह है कि इस प्रजाति के सर्वोच्च स्थान पर स्त्री विराजमान है और पुरुष की रचना उस प्रजाति को आगे बढ़ाने एवं उसके संरक्षण में सहायता के लिए हुई है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमयंते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूजयंते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।।

अर्थात, जिस स्थान में नारी की पूजा, उसका सम्मान किया जाता है देवता भी वही वास करते हैं और जिस स्थान में नारी को असम्मानित किया जाता हो वहां के निवासी चाहे कितने ही धार्मिक कार्य करते हों उनके सब कार्य निष्फल हो जाते हैं।

दु:ख की बात यह है कि आज के आधुनिक समाज में भी मुझे वह स्थान नहीं मिला जिसपर केवल मेरा एकाधिकार है। भारत जैसे देश में जहां स्त्री को देवी के रूप में पूजा जाता है वहाँ भी मेरी स्थिति दयनीय है। घर

चाहे धनवान का हो या निर्धन का दोनों परिवेशों में पुरुषों की मानसिकता एक सी है। मुझे केवल पुरुष की संतुष्टि और संतान को जन्म देने वाले यंत्र के समान समझा गया। इनकी मानसिकता की कल्पना इसी बात से की जा सकती है कि इन्हे मेरा स्त्रीत्व, मेरे पहनावे और व्यावहारिकता मे दिखता है है। हंसी आती है मुझे इनकी ऐसी सोच पर, जानते है क्यूँ ? क्योंकि यदि ऐसा होता तो ईश्वर मुझे स्तन और योनि प्रदान नहीं करता बल्कि वस्त्र पहना कर भेजता। अरे मूर्खों ! ईश्वर ने तो सभी प्रजातियों को नग्न ही भेजा था इस संसार में फिर तुम कौन होते हो मुझे मेरे स्त्रीत्व का पाठ पढ़ाने वाले।

इतिहास उठा कर देखोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि वस्त्रों की आवश्यकता इसलिए नहीं थी कि मनुष्य को नग्न रहने में संकोच था बल्कि उसने यह सब मौसम के अनुकूल किया, सर्दी और गर्मी में अपने शरीर को बचाने के लिए। समय के साथ वस्त्र पहनना कब एक नैतिक कर्तव्य बन गया, पता ही नहीं चला और इसे सबसे अधिक स्त्रियों पर थोपा गया।

क्यूँ?

क्योंकि पुरुष स्वयं की इंद्रियों पर नियंत्रण रखने मे असक्षम है इसलिए पुरुष की कमियों के कारण स्त्रियों को अपने अधिकारों से वंचित होना पड़ा। क्या कभी किसी स्त्री ने पुरुषों के कम वस्त्रों के कारण अपना नियंत्रण खोकर उनपर आक्रमण किया है? “लज्जा तो स्त्री का गहना है” ऐसी निरर्थक बातें बता बता कर ही समाज ने स्त्री के लिए एक साँचे का निर्माण किया है। जो स्त्री समाज द्वारा निर्मित उस साँचे के अनुसार नहीं ढलती, समाज उसे निर्लज्ज, कुलक्षिणी, पतिता जैसे नामों से बुलाता है।

स्त्री पराया धन है.. !

एक स्त्री का सम्पूर्ण जीवन दूसरों को समर्पित रहता है। जन्म लेती है तो पिता के संरक्षण मे रहती है, उसके किये हर कार्य को पिता और पिता के वंश के सम्मान से जोड़ दिया जाता है। विवाह होता है तो पिता उसे पति की सेवा करने की शिक्षा दे कर विदा करते है, ससुराल में भी अपनी खुशियों और सुख की चिंता किये बिना वह सबकी सेवा मे तत्पर रहती है । परंतु वहाँ भी उसे सम्मान मिलेगा यह उसके ससुराल पक्ष के लोगों की मानसिकता पर निर्भर होता है। माँ बनने के बाद तो उसके जीवन का उद्देश्य ही बदल जाता है, अब उसकी खुशियां उसकी संतान की हंसी में निहित हो जाती हैं। स्त्री का भाग्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसका पति कैसा है, यदि पति ऐसा मिले जो स्त्री के मन की बात को समझे और अपनी पत्नी और परिवार में समन्वय बिठाना जानता हो तो स्त्री का जीवन सुख से परिपूर्ण हो जाता है और जीवन में आने वाली कठिनाइयों को वह सरलता से पार कर लेती है। वहीं यदि पति अभिमानी और पत्नी को तुच्छ समझने वाला हो तो नारी का जीवन और अधिक कष्टदायी हो जाता है ।

जीवन में स्त्री को ईश्वर ने पहले ही इतने कष्ट दिए हैं इसलिए पुरुष को चाहिए कि वह अपने संपर्क में आने वाली हर स्त्री का आदर करे और हर संभव प्रयास करे की कम से कम वह उसके दुख का कारण न बने। स्त्री अपने जीवन में माहवारी का दर्द सहती है, विवाह के समय माता-पिता और भाई बहनों से वियोग का, माँ बनते समय

तो उसका स्वयं का जीवन दांव पर लगा होता है, फिर भी वह सब सहन करके अपने मायके और ससुराल के लोगों की खुशियों के लिए अपने सुख का त्याग कर देती है। एक पत्नी और माँ बनने के पश्चात स्त्री के जीवन में अवकाश उसकी मृत्यु के पश्चात ही प्राप्त होता है। वह निरंतर अपने परिवार के छोटे बड़े सभी कार्यों को पूरा करने में लगी रहती है।

समाज में पुरुषों के समान योगदान

अनादिकाल से ही स्त्री पुरुषों के समानांतर घर-परिवार, समाज व देश के लिए त्याग और बलिदान देती आ रही है। माता सीता ने पत्नी धर्म निभाने के लिए अपने सभी सुखों का त्याग कर पति के संग वनवास झेला। उसी पति द्वारा अवहेलना किए जाने पर उन्होंने अपने सतीत्व का प्रमाण देते हुए प्राण तक त्याग दिए। रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए राजपाठ छोड़कर युद्ध किया। सावित्रीबाई फुले ने स्त्रियों की शिक्षा, सती प्रथा तथा जातिवाद के लिए संघर्ष किया, वह भी ऐसे समय में जब स्त्रियों को पढ़ने तो क्या, घर से बाहर निकलने के लिए भी अनुमति की आवश्यकता होती थी। भारत ही नहीं पूरे विश्व की महिलाओं ने समय समय पर अपनी योग्यताओं का परिचय दिया है। जेन ऑस्टिन ने 1775 में 4 उपन्यास लिखकर यह दिखाया कि 1700 ई. में ब्रिटेन में जीवन कैसा था, यह उपन्यास आज भी उतने ही प्रभावशाली हैं जितने तब थे। इटली की फ्लोरेंस नाइटिंगेल को 'लेडी विद द लैम्प' भी कहा जाता है, वह सेना में उपचारिका थीं और रात में भी अपने मरीजों का हाल देखने चलीं जाया करती थीं। इसी प्रकार पोलैंड की वैज्ञानिक मैरी क्यूरी ने रेडियम की खोज की थी। पत्नी, माता, रानी, अध्यापिका, स्वतंत्रता सैनानी, लेखिका, उपचारिका, वैज्ञानिक अपने हर दायित्व को निभाते हुए स्त्रियों ने अपनी अद्भुत योग्यताओं का प्रमाण दिया है।

क्या स्त्री ही स्त्री की शत्रु है.. ?

नहीं, बिल्कुल नहीं किन्तु ऐसी धारणा है कि केवल पुरुष ही स्त्री का शत्रु नहीं है अपितु कभी-कभी स्त्रियाँ ही अपनी सबसे बड़ी शत्रु बन जाती है। जिन कठिन परिस्थितियों से एक स्त्री गुजरती है,वह आने वाली नई पीढ़ी की स्त्री से भी यही अपेक्षा करती है कि वह भी यह सारे कष्ट झेले। वह यह नहीं सोचती कि जिन कष्टों से मैं गुजरी हूँ, उनसे मैं अपनी बेटी, बहन, बहू, देवरानी को न गुजरने दूँ बल्कि पुरुषों से पहले एक महिला ही दूसरी महिला के विरोध मे खड़ी हो जाती है।

लेकिन ऐसा होता क्यों है?

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि महिलाएं भी आखिर इसी समाज का हिस्सा होती हैं। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक जो बाते वे देखती और सीखती आई होती हैं उसी में उनका विश्वास बंध जाता है। और इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि पिता अपनी बेटी को शिक्षा देने के लिए उसकी माँ का सहारा लेता है। ठीक उसी प्रकार यदि एक ससुर को अपनी बहू को कोई बात सिखानी होती है तो वह स्वयं उसे जाकर नहीं सिखाता, बल्कि वह सहारा लेता है अपनी पत्नी का ताकि बहू कोई विरोध ना करे।

दरअसल स्त्रियों को बचपन से इस प्रकार कि परवरिश दी जाती है कि यदि हम उस परवरिश से अलग होकर कुछ भी करती हैं तो स्वयं ही हीन भावना की शिकार हो जाती हैं। हमारे लिए जो भी सही है वह हम नहीं चुनतीं, दूसरों द्वारा चुना जाता है। परंपराओं और मान्यताओं के जाल में फंसा कर उसके पंख काट दिए जाते हैं। ऐसे पहनो, ऐसे उठो-बैठो, ऐसे हंसो-बोलो जैसे हम मनुष्य नहीं कोई खिलौना हों।

निष्कर्ष :

स्त्री और पुरुष दोनों की ही रचना ईश्वर ने की और दोनों को अपनी प्रजाति को बढ़ाने में सहयोग देने योग्य बनाया। ईश्वर ने दोनों को उनकी क्षमता के अनुसार कार्य सौंपे हैं। दोनों की शारीरिक रचना और बौद्धिक क्षमता इन कार्यों को पूर्ण करने हेतु प्रदान किये गए हैं। न तो पुरुष स्त्री से श्रेष्ठ है और न ही स्त्री पुरुष से, सत्य तो यह है की वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्री के बिना पुरुष और पुरुष के बिना स्त्री का जीवन अधूरा है। स्त्री और पुरुष के इस व्यवहारिक संतुलन के कारण ही मानव जाति बची हुई है परंतु समाज को यह भी ध्यान रखना होगा कि स्त्री की अवहेलना करके वह अपने अंत को निमंत्रण दे रहा है। अब तक स्त्री अपनी शक्ति और अधिकारों से अनभिज्ञ थी किन्तु अब जब वह अपने सम्मान को पाने के लिए संघर्ष कर रही है। ऐसे में समाज के पुरुषों का कर्तव्य है, स्त्रियों के संघर्ष में सहयोग दें और अन्य पुरुषों की मानसिकता बदलने में सहायता करे। यदि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अवसर प्राप्त होंगे तो वे भी देश और समाज के हित के लिए अपना योगदान दे सकेंगी और देश के विकास में उपयोगी सिद्ध होंगी। स्त्रियों को प्रतीक्षा है तो केवल एक अवसर की, जो उनका अधिकार भी है।

कामेश्वर धाम- कारो

राजेश रजक
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

हमारा देश भारत अपनी संस्कृति, संस्कार, आचार-विचार, व्यवहार और धर्म के लिए विश्व विख्यात है। भारत की भूमि पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाती है। भारतीय लोगों में आस्था और विश्वास प्रगाढ़ रुप से वास करते हैं । यहाँ के लोगों को कण-कण में राम और कंकड़ में शंकर मिल जाते हैं।

भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश, अनेकानेक कारणों से सदैव ही सुर्खियों में बना रहता है। उत्तर प्रदेश की भूमि अतीत से वर्तमान तक अनेकों ऐतिहासिक व धार्मिक घटनाओं की साक्षी रही है। इस भूमि पर त्रेतायुग में श्री राम और द्वापरयुग में श्री कृष्ण बनकर भगवान ने अवतार लिया, वहीं काशी खंड बनारस में श्री विश्वनाथ महादेव सारे विश्व के कष्टों का नाश करते हैं और मुक्ति प्रदान करते हैं।

उत्तर प्रदेश में स्थित बलिया जिला, राज्य के चरम उत्तरी-सीमा पर सरयू नदी है, जिसे घाघरा या देवहा भी कहा जाता है। इसी बलिया जिला में स्थित 'कारो' गाँव में भगवान शंकर की अति प्राचीन मंदिर 'कामेश्वर धाम' अनेको भक्तों के आस्था का केन्द्र है।

पुराणों और जनश्रुतियों के अनुसार जब माता सती के देहत्याग के पश्चात भगवान शंकर अत्यधिक अशांत हो गए थे, तब इसी स्थान पर वह हजारों वर्षों तक समाधि में लीन रहे। राक्षस तारकासुर के नाश के लिए, देवताओं के प्रतिनिधि कामदेव ने समाधि में लीन भोलेनाथ को जगाने के लिए, भगवान शंकर पर पुष्प बाण चलाया जिसके कारण भगवान शिव का तीसरा नेत्र खुल गया और उस अग्नि में कामदेव भस्म हो गए। यहाँ साक्ष्य के रुप में वह अधजला आम का वृक्ष आज भी मौजूद है ।

त्रेतायुग में भगवान राम, महर्षि विश्वामित्र और भाई लक्ष्मण के साथ इस स्थान पर आए थे, जिसका वर्णन रामायण में भी मौजूद हैं। ऋषि दुर्वासा ने भी इसी स्थान पर तप किया था।

इस स्थान का नाम पूर्व में 'कामकारु कामशिला' था। यही कामकारु अपभ्रंश में काम शब्द खोकर कांरु, कारुन और अब कारो के नाम से जाना जाता है। इस शिवालय की स्थापना अयोध्या के राजा कमलेश्वर ने की थी।

कहा जाता है कि यहाँ आकर राजा का कुष्ठ रोग दूर हो गया था तथा उन्होनें विशाल तालाब मंदिर के संलग्न बनवाया जिसे 'रानी पोखरा' के नाम से जाना जाता है।

कामेश्वर धाम मंदिर को कालांतर में अनेको बार जीर्णोद्धार करने के पश्चात अब सुंदर ढंग से सजाया संवारा जा चुका हैं। मंदिर में स्थित शिवलिंग जमीन की खुदाई से प्राप्त हुआ था जोकि ऊपर से थोड़ा सा टूटा या खंड़ित हैं, यह शिवलिंग चौकोर आकार का है। प्राचीन समय में मंदिर परिसर में स्थित रानी पोखरा का सारे ग्रामवासी नित्य स्नान आदि के लिए प्रयोग करते थे, परन्तु वर्तमान समय में इस पोखरा को चारों ओर से सीमेंटिंग कर पक्का व मजबूत कर दिया गया है। किसी प्रकार की अप्रिय घटना को रोकने के लिए चारों ओर लोहे की रेलिंग से घेर दिया गया है। छठ पर्व व अन्य पूजा-पाठ के लिए ही रानी पोखरा के द्वार जन साधारण के लिए खोलें जाते हैं।

कामेश्वर धाम मंदिर में महाशिवरात्रि के अवसर पर सुंदर छटा देखते ही बनती है। मंदिर का रंग-रोगन कर रंगीन झालरों से सजाया जाता हैं। विभिन्न प्रांतो से आए हुए संतो की सेवा व आवभगत की जाती हैं। इस अवसर पर मंदिर के संलग्न प्रवचनों कथाओं एवं सुमधुर संगीत का आयोजन की व्यवस्था पूजा कमेटी और ग्रामवासियों के माध्यम से की जाती है।

यह मंदिर न केवल लोक आस्था का केन्द्र है बल्कि लोगों की आर्थिक अवस्था को भी सुदृढ़ करता है। इस मंदिर के पास ही एक अत्यंत विशाल जलाभूमि है, जहाँ कमल के पुष्पों की खेती की जाती है। शाम के समय पोखरा, मंदिर की छटा और कमलों के पुष्पों से घिरा यह स्थान अद्भुत सौंदर्य बिखेरता है।

कारो गाँव की दूरी बक्सर स्टेशन से लगभग 30 किलोमीटर है। स्टेशन से बस, टैक्सी, जीप आदि के माध्यम से मंदिर तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। मंदिर के आस-पास धर्मशाला की सुविधा है। इस स्थान पर शादी-विवाह, कथाएँ व अन्य पुण्य कार्यों का भी आयोजन किया जाता हैं।

इस स्थान को सटीक ढंग से समझने के लिए आप को अवश्य ही कुछ समय इस मंदिर में ध्यानपूर्वक बैठना चाहिए। यह गाँव न केवल मंदिर बल्कि यहाँ के विख्यात श्रावण मास के मेले और कांवड़ यात्रा के लिए भी प्रसिद्ध है।

भगवान भोलेनाथ के लाखो भक्त इस मंदिर के श्रावण मास के सोमवार के दिन पहुँचते हैं। कारों के श्रावण मास में दूर-दूर से भक्त आते हैं और इस अति प्राचीन व चमत्कारी मंदिर में अपनी हाजिरी लगाते हैं। इस स्थान पर आकर भक्तों को मानसिक शांति और सुख की प्राप्ति होती है।

डर के आगे जीत

स्मृति नागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

अभी कुछ ही दिन पहले दिल्ली जाते समय हवाई यात्रा के दौरान मुझे लगभग साल भर पूर्व अपने पुत्र संयम के साथ किया गया 'स्काई डाइविंग' यानी हवाई जहाज से हवा में कूदने का रोमांचकारी अनुभव याद आ रहा था, जिसे मैं अपने पाठकों के साथ साझा करना चाहती हूँ।

संयम ने 2018 में आई.आई.टी कानपुर से बी.टेक करने के उपरांत इसी वर्ष अमेरिका के एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी में पी एच डी के लिए दाखिला लिया। सोचा तो यही था साल में एक बार आना-जाना होगा तो उससे, दूर रहने की सारी उदासी और प्रतीक्षा खुशी में बदल जाएगी। पर अगले साल के शुरु से कोरोना महामारी ने संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया और यातायात की सारी संभावनाएं रद्द हो गयीं। कितनी हाहाकार मची, कितनों ने अपनों को खोया, हम भी फोन के सहारे सिर्फ बातें करते हुए अपने को समझाने लगे। ईश्वर को मनाते रहे, बच्चा हमसे दूर है तो क्या, सुरक्षित रहे।

खैर, यातायात व्यवस्था दुरुस्त होते ही मैने अपने कार्यालय से विदेश जाने की अनुमति ली और दिसम्बर 2021 में बीस घंटे का हवाई सफर अकेले ही तय करके 'दिल्ली' से 'फीनीक्स' पहुँच गयी। यात्रा के दौरान मैंने पाया कि मेरे अन्दर उत्सुकता से ज्यादा ढाई वर्ष बाद पुत्र से मिलने की खुशी हिलोरें ले रही थी। यात्रा से पहले इतनी लम्बी यात्रा को लेकर जो भी शंकाएं एवं थकान न जाने कहाँ गायब हो गये। हम दोनो खुशी के आंसुओं से सराबोर हो रहे थे। जिस बच्चे को ढाई वर्ष पूर्व उच्च शिक्षा के लिए मैंने विदा किया था, वो अब एक स्मार्ट नवयुवक बन मेरे सामने खड़ा था।

अगले दिन से पांच-सात दिन कैसे बीते, पता ही नहीं चला। संयम पूरे हफ्ते अपने काम में लगा रहा और मैं जेट लैग के असर से उबरकर उसके लिए खाना बनाने में लगी रही । वो अक्सर अपने दोस्तों को ले आता और सब बच्चे मिलकर जब बड़े चाव से घर का खाना खाते, तो मैं उनको देखती रहती ।

कुछ दिनों के बाद संयम ने 'सेन डिएगो' घूमने जाने का प्रोग्राम बनाया। वहां पहुँच कर दो दिन तो हम लोग खूब घूमे, वहां के मशहूर बल्वोवा पार्क, चिड़ियाघर और समन्दर तट के मनोहरी दृश्य देखकर बहुत अच्छा लगा। फिर एक शाम संयम ने कहा, "माँ हम लोग कल स्काई डाइविंग के लिए जा रहे हैं"। मुझे लगा वह अपने लिए बोल रहा है, तो मैंने उसे ऐसे खतरनाक गेम के लिए मना कर दिया और कहा कि मैं अकेले दिनभर होटल में क्या करुँगी । इस पर संयम ने कहा कि "होटल में? माँ आप मेरे साथ जम्प करोगी, बुकिंग हो चुकी है। अब डरने की बारी मेरी थी। फिर हमारे बीच एक छोटा-मोटा घमासान युद्ध हुआ पर उसकी जिद के आगे मुझे घुटने टेकने पड़े।

सुबह, हम दोनों हल्का-फुल्का नाश्ता करके तैयार होकर फ्लाईंग स्कूल के लिए रवाना हो गए। रास्ते भर मैं उसे मनाती रही कि मुझे स्काई डाइविंग नहीं करना है और वो मुझे समझाता रहा कि इसमें डरने की कोई बात नहीं है। वहां पहुँचने पर वहां के इंस्ट्रक्टर ने हमें जरुरी सावधानियों के बारे में समझाया, हेलमेट और पैराशूट पहनाया और एक छोटे से विमान में बैठने के बाद 15-20 मिनट में 10,000 फीट की ऊंचाई पर पहुँच गए। विमान की खिड़की से विशाल अनंत प्रतीत सा होता प्रशांत महासागर दिखने लगा। मैं फिर डर गयी, कहीं यहीं से स्काई डाइविंग तो नहीं होगा, पर फिर विमान एक तरफ मुड़ा और नीचे धरती देख कुछ राहत महसूस हूई। इंस्ट्रक्टर ने वहाँ से 'मेक्सिको वाल' दिखाया। खैर वक्त आ गया था विमान से कूदने का । इंस्ट्रक्टर के थम्स-अप करते ही विमान का दरवाजा खुला । बाहर से तेज हवा और आवाज आ रही थी। मुझे, टैंडेम के साथ पैर विमान से बाहर निकालते ही एक झटके से गुरुत्वाकर्षण की अनुभूति हुई । मेरी आँखें बंद हो गयीं और फिर न जाने कितनी बार हवा में कलाबाजियां करती रही। यह वक्त होता तो बस कुछ सेकंड का, परन्तु मुझे बहुत लम्बा प्रतीत हो रहा था। सब कुछ शून्य सा हो गया। सब कुछ जैसे थम गया हो। मस्तिष्क में कोई विचार नहीं था, बिल्कुल ब्लैंक। ऐसी अनुभूति कभी भी नहीं हुई थी । ध्यान करने पर भी कभी ऐसा नहीं लगा। तभी धीरे से पैराशूट खुला और साथ ही मेरी आँखें भी। नीचे प्राकृतिक हरियाली से परिपूर्ण धरती और ऊपर स्वच्छ नीला आकाश। अब भय लेशमात्र भी नहीं था। मैं जैसे एक चिड़िया बन गयी थी । मेरी हालत "पंछी बनूँ उड़ती फिरुँ मस्त गगन में" जैसी थी। कभी दांए तो कभी बांए ओर उड़ते हुए लैंडिंग की तैयारी थी। कुछ पल के बाद मेरा पक्षी जीवन समाप्त हो रहा था पर उसकी अनुभूतियाँ, भयावहता और मुध्दता हमेशा मेरी स्मृतियों में बसी रहेगी ।

आज सोचती हूँ तो विश्वास नहीं होता कि मैंने स्काई डाइविंग की है । उसे एक खतरनाक गेम मानकर उससे डरने वाली मुझमे यह हिम्मत मेरे बेटे ने ही भरी थी। वह संयम ही था जिसने मुझे मेरे डर से आगे ले जाकर इस अद्भुत रोमांचकारी पल को मेरे जीवन में जोड़ा।

सत्य

काजल जैन
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(रक्षा सेवाएं), नई दिल्ली

एक बार एक महात्मा जी किसी गांव के पास जंगल में साधना कर रहे थे। उन महात्मा जी का झूठ बोलने का त्याग था, इसलिए गांव के सभी लोग उनको बड़ा सम्मान देते थे।

एक दिन जब महात्मा जी बैठकर ध्यान कर रहे थे तभी एक मृग वहां से निकला और उसके कुछ समय बाद एक शिकारी वहां आया। उस शिकारी ने महात्मा जी से पूछा, बाबा जी क्या आपने किसी मृग को यहां से निकलते हुए देखा है? महात्मा जी समझ गए कि यह शिकारी उस मृग का शिकार करने आया है। उनके मन में उस मृग के लिए करुणा उत्पन्न हुई, पर महात्मा जी का तो झूठ बोलने का त्याग था।

महात्मा जी उस मृग की रक्षा का उपाय सोचने लगे, तभी उनको एक ख्याल आया और वह उठकर खड़े हो गए। उन्होंने उस शिकारी को उत्तर दिया, हे वत्स- जब से मैं यहां खड़ा हूँ तब से कोई मृग यहां से नहीं निकला। शिकारी ने महात्मा जी की बातों पर विश्वास कर लिया और वापस गांव आने लगा। महात्मा जी भी पुन: ध्यान मे लीन हो गए।

कुछ दूरी पर शिकारी ने देखा कि मृग के पदचिह्न हैं जो कि महात्मा जी के पास से ही होकर गुजर रहे हैं, उसको बहुत अधिक क्रोध आया कि महात्मा जी तो झूठ बोलते हैं।

वह गांव वापस आया और ग्रामवासियों को बताया कि महात्मा जी ने झूठ बोला। सभी ग्रामवासियों ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और जंगल आकर महात्मा जी को बहुत भला-बुरा कहा। अंतत: महात्मा जी को वह स्थान छोड़कर जाना पड़ा।

एक सच वह था जो महात्मा जी ने शिकारी से कहा था और एक सच वह था जो शिकारी ने ग्रामवासियों से कहा था लेकिन दोनो के सच में अन्तर था।

आज के परिवेश में कुछ ऐसा ही प्रचलन है, कभी-कभी समाज में होने वाली छोटी-छोटी घटनाएं अधूरे सत्य और अफवाह के कारण बड़ा रुप ले लेती हैं। आवश्यकता है इन सबसे बचने की। सत्य के भी कई पहलू होते हैं जिस सत्य से किसी का बुरा हो, वह सत्य भी झूठ के समान ही होता है।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 समापन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा 2022 का प्रतियोगिता परिणाम

1. निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	सत्यवीर गौरव (स्टेनो)
द्वितीय	सुनीता (ले.प.)
तृतीय	अरुण लोहानी (ले.प.)

2. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम	ज्योति
द्वितीय	मोहित कुमार
तृतीय	पवन

3. टिप्पण लेखन

प्रथम	सुधा शुक्ला
द्वितीय	तनवी पाराशर
तृतीय	शिवम शुक्ला

4. **20,000 से अधिक हिंदी शब्द**

प्रथम	यशपाल यादव
द्वितीय	बिजेन्द्र
तृतीय	राजकिरण

5. अनुवाद प्रतियोगिता परिणाम

प्रथम	मीनाक्षी
द्वितीय	रामसिंह
तृतीय	जितेन्द्र

6. कविता पाठ

प्रथम	काजल जैन
द्वितीय	सुधा शुक्ला
तृतीय	अरूण लोहानी

7. श्रुत लेखन

प्रथम	राम सिंह
द्वितीय	सुधा शुक्ला
तृतीय	शिवम शुक्ला/सत्यवीर गौरव यादव

पिछले वर्ष सेवानिवृत हुए कर्मचारियों की सूची

सेवानिवृत सूची-2023								
क्र.सं.	एच.ओ.एस. संख्या	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पद	वर्ग	जन्म तिथि	सेवानिवृत तिथि	वर्तमान स्टेशन	टिप्पणी
1.	2595	सतन पोद्दार	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	03.01.1963	31.01.2023	पटना	
2.	1627	विनय शंकर जोशी	पर्यवेक्षक	सामान्य	05.01.1963	31.01.2023	पूणे	
3.	2149	सुब्रता साहा	पर्यवेक्षक	एस.सी.	23.01.1963	31.01.2023	डीजीए(ओएफ) कोलकाता	
4.	1938	ब्यास कुमार	व.ले.प.अ	सामान्य	15.01.1963	31.01.2023	देहरादून	
5.	1982	वी. नन्दकुमार	व.ले.प.अ	सामान्य	07.01.1963	31.01.2023	मुंबई	
6.	1747	देबाब्रोता चक्रवर्ती	पर्यवेक्षक	सामान्य	03.03.1963	31.03.2023	डीजीए(ओएफ) कोलकाता	
7.	2258	उमा शंकर	एस.सी.डी.	सामान्य	12.03.1963	31.03.2023	डीजीए(वायुसेना) दिल्ली	
8.	2606	सुरेन्द्र कुमार श्रीवा-स्तव	एम.टी.एस.	सामान्य	22.03.1963	31.03.2023	जम्मू	
9.	1992	रमेश कुमार धर	व.ले.प.अ.	सामान्य	30.03.1963	31.03.2023	डीजीएडीएस, दिल्ली	
10.	2514	मोहन लाल	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	07.04.1963	30.04.2023	प्रयागराज	
11.	1994	सतबीर सिंह	व.ले.प.अ	एस.सी.	10.04.1963	30.04.2023	चंडीगढ़	
12.	1986	के.वी.ए. प्रसाद	व.ले.प.अ	सामान्य	04.05.1963	31.05.2023	विजाग	
13.	1855	रघबीर सिंह	व.ले.प.अ	एस.सी.	14.05.1963	31.05.2023	चंडीगढ़	
14.	1737	रजनीश शर्मा	व.ले.प.अ	सामान्य	08.05.1963	31.05.2023	सीएण्डएजी, दिल्ली	
15.	1735	श्रीमती कुसुम सिंह	पर्यवेक्षक	एस.सी.	06.06.1963	30.06.2023	डीजीए(वायुसेना) दिल्ली	
16.	2397	गौतम कुमार साहा	सहायक पर्यवेक्षक	एस.सी.	16.06.1963	30.06.2023	डीजीए(ओएफ) कोलकाता	
17.	2412	अशोक गणपति मदने	एम.टी.एस.	सामान्य	01.07.1963	30.06.2023	पूणे	
18.	9001	श्रीमती सविता रैना	व.ले.प.	सामान्य	20.06.1963	30.06.2023	डीजीएडीएस, दिल्ली	प्रतिनियुक्ति
19.	2018	गोपा कुमारन नेयर बी.	व.ले.प.अ	सामान्य	12.07.1963	31.07.2023	कोच्ची	

सेवानिवृत सूची-2023								
क्र.सं.	एच.ओ.एस. संख्या	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पद	वर्ग	जन्म तिथि	सेवानिवृत तिथि	वर्तमान स्टेशन	टिप्पणी
20.	1921	नरेन्द्र कुमार आर्य	पर्यवेक्षक	एस.सी.	21.07.1963	31.07.2023	पूणे	
21.	2445	प्रशन्ता कुमार मंडल	सहायक पर्यवेक्षक	एस.सी	26.07.1963	31.07.2023	डीजीए(ओएफ) कोलकाता	
22.	1928	शशि भुषण नवीन	व.ले.प.अ	सामान्य	01.08.1963	31.07.2023	पटना	
23.	1755	सुधीर कुमार	व.ले.प.अ	सामान्य	08.07.1963	31.07.2023	एफवाई शाखा, दिल्ली	
24.	1801	राम केवल राम	सहायक पर्यवेक्षक	एस.सी.	05.08.1963	31.08.2023	पटना	
25.	1877	घनश्याम नानूराम काबरा	व.ले.प.अ	सामान्य	19.08.1963	31.08.2023	पूणे	
26.	1950	अभोय शंकर रोय	व.ले.प.अ	सामान्य	01.09.1963	30.08.2023	डीजीए(ओएफ) कोलकाता	
27.	1967	दिलबाग सिंह	व.ले.प.अ	सामान्य	05.09.1963	30.09.2023	चंडीगढ़	
28.	2291	यमुना प्रसाद	व.ले.प.	एस.टी.	18.10.1963	31.10.2023	जबलपुर	
29.	2573	बींदेश्वरी राम	व.ले.प.	एस.सी	04.11.1963	30.11.2023	पटना	
30.	1822	श्रीमती उषा रानी बावेजा	एस.पी.एस	सामान्य	22.11.1963	30.11.2023	डीजीए(वायुसेना) दिल्ली	
31.	1827	संतन डिनिज	व.ले.प.अ	सामान्य	07.11.1963	30.11.2023	किरकी	
32.	1993	राजेश वामन राय राउत	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	30.12.1963	31.12.2023	अंबाझारी	
33.	1748	आर के झा	व.ले.प.अ	सामान्य	14.12.1963	31.12.2023	कोलकाता(ए)	
34.	1861	मेनन वल्सन कुमार	व.ले.प.अ	सामान्य	08.12.1963	31.12.2023	मुंबई	

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागज़ात, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी दोनों जारी किए जाएं।

कार्यालय में मूल पत्राचार हिंदी में ही किया जाए।

हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर केवल हिंदी में दिए जाएं।

केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारियों एवं आशुलिपिकों को हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यों में हिंदी टिप्पणी लेखन को प्रोत्साहित किया जाए।

कार्यालय के सभी कंप्यूटरों पर हिंदी के प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।

अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को केन्द्रीय अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को अधिक बढ़ावा देने के लिए सरकारी कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए।

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार होते हैं एवं विचारों/लेखन की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है।

हिंदी दिन सोहळा - २०२३ आणि
तिसरा अखिल भारतीय राजभाषा संमेलन
हिंदी दिवस समारोह - 2023 एवं
तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

हिंदी दिवस-2023
तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे

हिंदी दिन सोहळा - २०२३ आणि

प्रकाशकः

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं,

7वां तल, ए ब्लॉक, अफ्रीका एवेन्यू, सरोजिनी नगर, दिल्ली–110023